राजस्थान सुन्दर साहित्य माला पुष्प नं. ८.

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी

लेखक—
श्रीनाथ मोदी जैन
निरीक्षक
टीचर्स ट्रेनिङ्ग स्कूल—जोधपुर।

प्रकाशक—
राजस्थान सुन्दर साहित्य सदन
जोधपुर.

प्रथमवार १००० सन १९२९ ई०

द्रव्य सहायक
श्री संघ—लुनावा (मारवाड.)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रस्तावना ।

वाचकवृन्द !

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद इतिहासवेत्ता मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज का संक्षिप्त परिचय आप लोगों के सम्मुख रखते मुझे अत्यंत हर्ष है । ऐसे उत्तम पुरुषों के जीवन से हमें ऐसे ऐसे उपदेश मिलते हैं कि यदि सच्चे दिल से ऐसे नर पुङ्गवों का अनुकरण किया जाय तो हमारा जीवन उच्च और आदर्श हो जाय ।

कहने की आवश्यक्ता नहीं कि वर्तमान समय में मुनि ज्ञानसुन्दरजी महाराजने जैन साहित्य के अन्दर किस प्रकार की जागृति उत्पन्न कर दी है । मारवाड़ जैसे शिक्षा में पिछड़े प्रान्त के अन्दर इस प्रकार ज्ञान की धूम मचा देना वास्तव में असाधारण योग्यता का कार्य है ।

इन दिनों मुनि श्री ऐतिहासिक खोज करने में संलग्न हैं जिस के फलस्वरूप हाल ही में " जैन जाति महोदय " नामक प्रमाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ है जिस से साफ प्रकट होता है कि मुनि श्री अपनी लगन के कैसे पक्के हैं । इस पुस्तक में मैंने आपश्री के जीवन की मुख्य मुख्य घटनाओं का संक्षेप में विवेचन किया है । आशा है पाठक चरितनायकजी के गुणों से परिचित होकर अपने आत्महित साधन के लिए कुछ ऐसे ही आदर्श चुनेंगे । विनीत—

३१–१०–२९ जोधपुर. श्रीनाथ मोदी जैन
लेखक.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विषय सूची।

१	प्रस्तावना	
२	विषय सूची	
३	विषयारम्भ	१
४	वंश परिचय	३
५	जन्म	४
६	बाल्यावस्था	५
७	गृहस्थावस्था	६
८	वैराग्य और दीक्षा....	७
९	विशेषता	९
१०	विक्रम संवत् १९६४ का चातुर्मास सोजत ...	११
११	,, ,, १९६५ ,, ,, बीकानेर	१२
१२	,, ,, १९६६ ,, ,, जोधपुर	१४
१३	,, ,, १९६७ ,, ,, कालू	१५
१४	,, ,, १९६८ ,, ,, बीकानेर	१७
१५	,, ,, १९६९ ,, ,, अजमेर	१८
१६	,, ,, १९७० ,, ,, गंगापुर	२०
१७	,, ,, १९७१ ,, ,, छोटी सादड़ी	२२

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१८ ,, ,, १९७२ ,, ,, तिंवरी २४
१९ ,, ,, १९७३ ,, ,, फलोधी २७
२० ,, ,, १९७४ ,, ,, जोधपुर २९
२१ ,, ,, १९७५ ,, ,, सूरत ३०
२२ ,, ,, १९७६ ,, ,, झघड़िया तीर्थ ३३
२३ ,, ,, १९७७ ,, ,, फलोधी ... ३५
२४ ,, ,, १९७८ ,, ,, ,, ... ३७
२५ ,, ,, १९७९ ,, ,, ,, ... ३९
२६ ,, ,, १९८० ,, ,, लोहावट ४९
२७ ,, ,, १९८१ ,, ,, नागोर ५२
२८ ,, ,, १९८२ ,, ,, फलोधी तीर्थ ५५
२९ ,, ,, १९८३ ,, ,, पीपाड़ ५७
३० ,, ,, १९८४ ,, ,, बीलाड़ा ५८
३१ ,, ,, १९८५ ,, ,, सादड़ी ६०
३२ ,, ,, १९८६ ,, ,, लुणावा ६२
३३ हमारी आशाएं ....
३४ आपका प्रकाशित साहित्य ६६
३५ आप की स्थापित की हुई संस्थाएं ७१

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

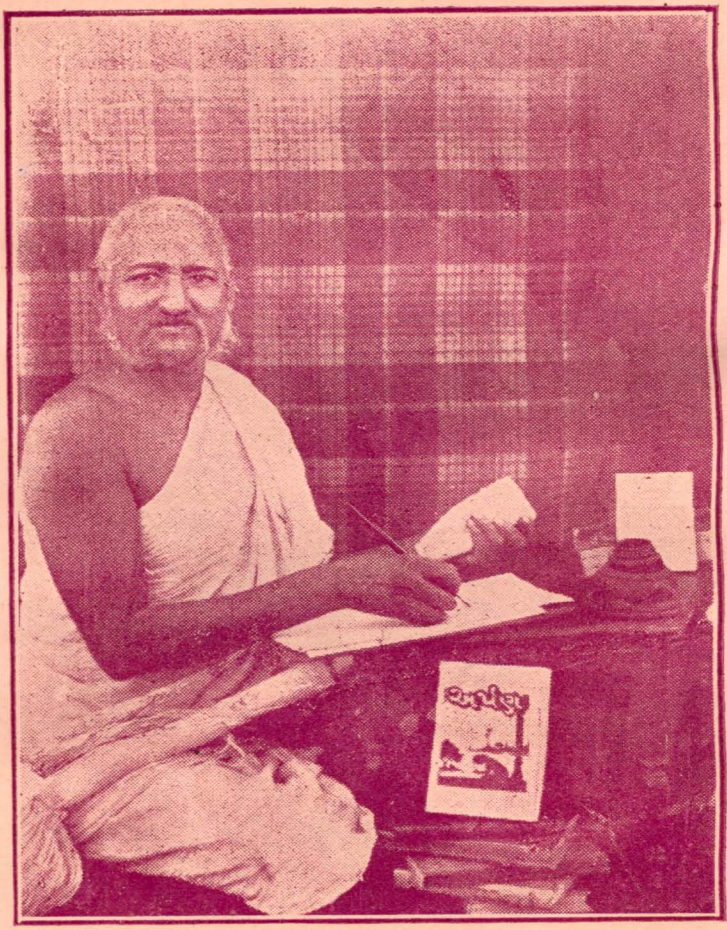

मुनिवर्य श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज ।

आनंद प्रिं. प्रेस–भावनगर.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनि ज्ञानसुन्दरजी.

असंगत नहीं होगा यदि पाठकों की सेवामें "जैन जाति महोदय" ऐतिहासिक महान् ग्रंथके प्रणेता पूज्यपाद इतिहासवेत्ता मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी का पवित्र चरित्र रखते अति हर्ष है। हमारी अभिलाषा बहुत दिनोंसे थी कि ऐसे महात्मा का जीवन जो आदर्श एवं अनुकरणीय है पाठकों के सामने इस उद्देशसे उपस्थित किया जाय कि अपने जीवनोद्देश को निर्माण करते समय वे इसे लक्ष्यमें रक्खे।

Full many a gem of purest way screne,
The dark unfathomed caves of ocean bear;
Full many a flower is born o blush unseen,
And waste its sweetness on t'de desert air.

अहा! उपरोक्त पंक्तियों में सचमुच किसी मनस्वी कविने क्या ही उत्तम कहा है। ऐसे रत्न भी है जो अत्यन्त उज्जवल एवं प्रभावान हैं परन्तु समुद्र की खोखलों में पड़े हुए हैं और ऐसे भी कुसुम हैं जिनके सौन्दर्य व सुगन्ध का अनुभव कोई नहीं जान पाता परन्तु क्या वे रत्न उन रत्नों से किसी प्रकार भी कम हैं जो हाट हाट में बिकते और मनुष्यों की दृष्टि में पड़ कर प्रशंसा पाते हैं? क्या वे पुष्प जो अपनी मनोहारिणी सुगंध को

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

केवल वन की वायु में ही विलीन कर देते हैं, उन बगीचों के फूलोंसे जो अपनी सुगन्धसे मनुष्यों के प्रशंसापात्र हैं किसी भी प्रकार कम हैं ?

इसी प्रकार वे महापुरुष जो चुपचाप दूरदर्शितासे अत्यावश्यक ठोस (Solid) कार्य करने से मनुष्यों में विख्यात नहीं हो सके क्या उन सांसारिक प्रशंसापात्र व्यक्तियों से कम हैं ? नहीं नहीं कदापि नहीं । जब ऐसे मनुष्यों की संख्या कम नहीं है जो प्रशंसा के अयोग्य हो कर भी उसके पात्र कहे जाते हैं तो क्या ऐसे सत्पुरुषों का मिलना दुर्लभ है जो संसारी प्रशंसा से सदा दूर भागते हैं ।

किसी विद्वान ने यथार्थ ही कहा है कि—

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः ।
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
नादंति सत्वं खलु वारवाहाः ।
परोपकाराय सतां विभूतयः ।

अर्थात् नदी अपने जल को आप नहीं पीती, वृक्ष अपने फलों को आप भक्षण नहीं करते और मेघजल वर्षा अन्न उपजा आप नहीं खाते । तात्पर्य यह है कि नदी का जल वृक्षों के फल और मेघों की वर्षा सदा दूसरों के ही काम आती है । इससे सिद्ध होता है कि सच्चे महापुरुषों की विभूति स्वधर्म, स्वदेश की सेवा और परोपकार के लिये ही होती है । ऐसे ही श्रेष्ठ परोप-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कारी महापुरुषों की श्रेणी में उच्च स्थान पाने योग्य जैन श्वेताम्बर समाज के उज्ज्वल रत्न श्रीमद् उपकेश गच्छीय मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज का पवित्र चारित्र इस प्रकार है—

वीरात् ७० सम्वत् में आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीजीने उपकेशपुर के महाराजा उपलदेव आदि को प्रतिबोध दे उन्हें जैनधर्म का अनुयायी बनाया था। महाराजा उपलदेव जैनधर्म को पालन कर अपने आत्मकल्याण में निरत था। वह अपने जीवन में प्रयत्न कर के जैनधर्म का विशेष अभ्युदय करना सदैव चाहता था और उन्होंने ऐसाही किया कि वाममार्गियों के अधर्म कीलों को तोड़ जैनधर्म का प्रचुरतासे प्रचार किया इस लिये आप का यश आज भी विश्व में जीवित है। वह नरश्रेष्ठ अपने गुणों के कारण बहुत प्रसिद्ध हो गया था। उसी के इतने उत्तम कृत्यों के स्मरणमें उस की संतान श्रेष्टि गौत्र कहलाने लगी।

श्रेष्टि गौत्र वालों की प्रचुर अभिवृद्धि हुई। वे सारे भारत में फैल गये। इन की आबादी दिन प्रति दिन तेज़ रफतार से बढ़ने लगी। मारवाड़ राज्यान्तर्गत गढ सिवाणा में विक्रम की बारहवी शताब्दी में जैनियाँ की घनी आबादी थी। केवल श्रेष्टि गौत्र वालों के भी लगभग ३५०० घर थे। उस समय गढ़ सिवाना में श्रेष्टि गौत्रीय त्रिभुवनासिंहजी मंत्री पद पर नियुक्त थे। आप बड़े विचारशील एवं राज्य शासन को चलाने में सिद्धहस्त थे।

इनके सुपुत्र मुहताजी लालासिंहजी का विवाह चित्तोड़ हुआ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

था। एक बार ये किसी कार्यवशात् चित्तोड़ गये हुए थे। इनको सच्चायिका देवी का पूर्ण इष्ट था। जिस दिन लालसिंहजी चित्तोड़ पहुँचे उसी दिनसे पूर्वही चित्तोड़ के महारावलजी की रानी चक्षु-पीड़ासे पीड़ित थीं। कई प्रयत्न महारावलजीने किये पर सब उपाय निष्फल हुए। योग्य चिकित्सक की तलाश करते करते राज्य कर्मचारियों को सिवानासे आए हुए मुहताजी लालसिंहजी से भेंट हुई। और उन्होंने अपना हाल सुनाया इस पर लालसिंहर्जाने कहा यदि आप चाहो तो मैं चक्षु पीड़ा मिटा सकता हुँ। कर्मचारियोंने कहा हम तो स्वयं इसी हित आए हैं। लालसिंहजीने सच्चायिका देवी के अनुरोधसे ऐसा उपाय बताया कि रानी की पीड़ा तत्काल जाती रही। सारा राज समाज लालसिंहजी की भूरि भूरि प्रशंसा करने लगा। महारानीने इस उपलक्षमें लालसिंहजी को बाहर-ग्राम इनायत किए तथा उनको वैद्यराज की उपाधि सदा के लिये प्रदान की तबसे श्रेष्टिगोत्र की एक शाखा वैद्य मुहत्ता कहलाई।

हमारे चरित नायक मुनि ज्ञानसुन्दरजी का जन्म इसी घराने में हुआ जो उपलदेव की संतान श्रेष्टिगोत्र की शाखा वैद्य मुहत्ता कहलाता था। मारवाड़ भूमि के अनर्गत वीसलपुर ग्राम में वैद्यमुहत्ता नवलमलजी की भार्या रूपादेवी की कूख से आप-श्रीका जन्म विक्रम सम्वत् १९३७ के आश्विन शुक्ला १० यानि विजया दशमी को हुआ। जब आप गर्भ में थे तो आपकी मातु-श्रीको हाथी का स्वप्न आया था तदनुसार ही आपका जन्म नाम "गयवर चंद्र" रखा गया। जबसे आपने अपने घर में जन्म

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिया सारा कुटुम्ब सुख शांतिसे रहने लगा। प्रत्येक के चित्त में प्रसन्नता का सागर उमड़ रहा था। आप अपनी बालक्रिडाओंसे अपने कुटुम्ब के लोगों का मनोरञ्जन करने लगे। आपकी तुतली बानी सबको अति कर्ण प्रिय थी।

बाल्यावस्था से ही आप सर्व प्रिय थे। आपका सरल व्यवहार सबको रुचता था। जब आप शिशु अवस्था से कुछ बड़े हुए तो शिक्षा प्राप्ति के हित पाठशाला में प्रविष्ट हुए। वहाँ पर सहपाठियों से आप सदा आगे ही रहते थे। आपने अल्प समयमें आवश्यक एवं अशातीत शिक्षा ग्रहण करली। जब आप पढ़ना छोड़ कर व्यापार करने लगे थे तो आप इस कार्य में बड़े कुशल निकले। व्यापार के व्यवहार में आपकी हठोती अनुकरणीय थी। जिस कार्य में आप हाथ डालते उसे अन्ततक उसी उत्साह से करते थे। यही आपकी स्वाभाविक टेव हो गई।

बाल्यावस्थासे ही आपको सत्संगतका बड़ा प्रेम था। जब ग्राम में कोई साधु या समाज सुधारक आता तो उससे आप अवश्य मिलते थे। इसी प्रवृति के कारण आप प्रायः स्थानकवासी साधुओं की सेवाउपासना किया करते थे। वहाँ आपने प्रतिक्रमण स्तवन स्वाध्याय तथा कुछ बोल (थोकड़े) याद करलिये। अबतक आप अविवाहित ही थे।

किन्तु सत्रह वर्ष की आयु में आपका विवाह सेलावास निवासी श्रीमान् भांनीरामजी बाघरेचा की पुत्री राजकुमारी से

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हुआ। विवाह से चार वर्ष पश्चात् आपका सांसारिक उलझनें खटकने लगीं। त्याग और वैराग्य की ओर आपकी भावनाएँ प्रस्तुत हुई। पर लालसा मन ही मन रही। कुटुम्ब को कब भाने लगा कि ऐसा सुयोग्य परिश्रमी और सदाचारी नवयुवक इस अवस्थामें हमें त्याग दे। आपने दीक्षालेने की बात प्रकट की पर तुरन्त अस्वीकृति ही मिली।

इसी बीच में आपके पिताश्री का देहान्त हुआ। यकायक सारा गृहस्थी का भार आपपर आ पड़ा तथापि आप अधीर नहीं हुए। आप अपने पिता के जेष्ठ पुत्र थे अतएव सारा उत्तरदायित्व आप पर आ पड़ा। आपके पाँच लघु भ्राता थे जिनके नाम क्रम से इस प्रकार हैं—गणेशमलजी, हस्तीमलजी वस्तीमलजी मिश्रीमलजी और गजराजजी। आपके एक बहिन भी थी, जिनका नाम यत्न बाई था।

कई सांसारिक बंधनों से जकड़े हुए होते भी आपकी अभिलाषा यही रहती थी कि ऐसा कोई अवसर मिले कि मैं शीघ्र ही दीक्षा ग्रहण करलूँ। संवत् १९६३ में आप अपनी धर्म पत्नी सहित परदेश जाने के लिये यात्रा कर रहेथे। रास्ते में रतलाम नगर आया जहाँ पूज्य श्रीलालजी महाराज का चातुर्मास था। आप वहाँ सपत्नी उतर गये। जाकर व्याख्यान में सम्मिलित हुए। पू० श्रीलालजी के उपदेश का असर आपके कोमल हृदय पर इस प्रकार हुआ कि आपने यह मन ही मन दृढ़ निश्चय करलिया कि अब मैं घर नहीं जाऊँगा। किसी भी प्रकार हो मैं अब

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शीघ्र दीक्षा ग्रहण करलूँगा। अब संसारके बन्धनों से उन्मुक्त होके रहूँगा। आप सपत्नि वैराग्य भावना के कारण करीबन् २ मास रतलाम में ठहर गये और धार्मिक अभ्यास में तल्लीन हो गये। यह बात आप के मातुश्री आदि कुटुम्ब के कानों तक पहुँचते ही उन्हें को महान् दुःख पैदा हुआ इस पर तारद्वारा सूचित कर गणेशमलजी को रतलाम भेजा और उन्होंने अनेक प्रकार से समझा के आप को घर पर लाना चाहा पर आप का वैराग्य ऐसा नहीं था कि वह धोने से उतरजाता या फीका पड़जाता आखिर गणेशमलजी के विवाह तक दीक्षा न लेने की शर्तपर गयवरचन्द्रजी तो पूज्यजी के पास में रहे और गणेशमलजी अपनी भावज को ले कर वीसलपुर आगये।

संसार की असारता आयुष्य की अस्थिरता और परिणामों की चञ्चलता आप से छीपी हुई नहीं थी जैसे जैसे आप ज्ञानाभ्यास बढ़ाते गये वैसे वैसे वैराग्य की धारा भी बढ़ती गई फिर तो देरी ही क्या थी ? आपने अपना मनोर्थ सिद्ध करने के लिये आखिर संवत् १९६३ के चैत्र कृष्णा ६ को नीमच के पास मामूणिया ग्राम में स्वयं दीक्षान्वित हो गये। आपने अपने अनवरत एवं अविरल उद्योग के कारण शीघ्र ही दसवैंकालिक सूत्र, सुखविपाक सूत्र और उत्तराध्ययनजी सूत्र का अध्ययन कर लिया। साथ में परिश्रम कर के आपने लगभग १०० थोकड़े भी कण्ठस्थ कर लिये।

इस के अतिरिक्त बोल चाल थोकड़े, ढाल, चौपाई, स्तवन,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छन्द और कवित्त तो आप को पहले ही से खूब याद थे। आप नित्य व्याख्यान भी दिया करते थे जो श्रोताओं को अति मनोहर प्रतीत होता था। वाक्पटुता का गुण आप में स्वभाव से ही विद्यमान है। झामूणिया से विहार कर के आप रामपुरा तथा भानपुरा होते हुए बूंदी और कोटे की ओर पधारे कारण पूज्यजी का विहार पहले से ही उस तरफ हो चुका था।

पश्चात् वहाँ से आप फूलीया केकडी होते हुए ब्यावर पधारे। ब्यावर से निम्बाज, पीपाड, बीसलपुर आये और अपने कुटम्बियों से आज्ञा की याचना की पर उन्होंने आज्ञा न दी तो वहाँ से जोधपुर आए यहाँ आप के सुसरालवाले तथा आप की पूर्व धर्मपत्नी राजबाई वगेरह आइं और अनेक प्रकार से अनुकूल प्रतिकूल परिसह दिये पर आप को उस की परवाह ही नहीं थी वहाँ से आप तिवरी तक पर्यटन कर पीछे ब्यावर पधार गये। ब्यावर से आप सोजत पधारे। इस भ्रमण में भी आप एकान्तर की तपस्या निरन्तर करते रहे। आप को अपने कुटुम्बियों की ओर से अनेक परिसह दिये गये पर आप अपने पथ से विचलित नहीं हुए। ज्यों ज्यों आप कष्टों की परीक्षा में तपाए गये आप सच्चे स्वर्ण प्रतीत हुए। इस समय की अनेक घटनाऐं जो आपश्री की अतुल धैर्यता प्रकट करती है स्थानाभाव से यहाँ नहीं लिखी जा सकती यदि अवसर मिला तो फिर कभी आपश्री का चरित्र विस्तृत रूप से पाठकों के समक्ष रखने का प्रयत्न किया जायगा। इस परिचय में केवल चतुर्मासों का संक्षिप्त वर्णन मात्र

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ही किया जायगा आशा है पाठकगण अभी इतने से ही संतोष मान लेंगे।

चातुर्मासों का विवरण लिखने के पहले यह आवश्यक है कि मुनिश्री के उन विशेष गुणों का वर्णन किया जाय जिन के कारण कि सर्व साधारण के हृदय में आपने घर कर रक्खा है। छोटे से बालक से लेकर वृद्धतक प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि मुनिश्री की मुखमुद्रा का दर्शन करता रहूं तथा आप की सु-मधुर वाणीद्वारा सदुपदेश का अमृतपान करूं। जो लोग आप से परिचय है उस का चित्त नहीं चाहता है कि मुनिराज मुझ से दूर हो तथापि आप एक स्थानपर अधिक नहीं ठहरते निरन्तर विचरण कर आप प्रत्येक ग्राम में पहुंच कर धर्मोपदेश सुनाने का प्रगाढ प्रयत्न करते रहते हैं। इस बात का प्रमाण पाठकों को आगे के चरित्र के पठन से भली भांति विदित होगा।

आप का जीवन अनुकरणीय एवं आदर्श है। आप के अनुपम त्याग, सत्यान्वेषण, तप, धर्म और जिज्ञासा का यदि सविस्तार वर्णन किया जाय तो एक बड़े ग्रंथ का रूप हो जाय। इस महात्मा के उपदेश, वार्तालाप, व्यवहार, कार्य, भाव और विचारों पर मनन करने से परम शांति प्राप्त होती है और साथ में सदा यही इच्छा उत्पन्न होती है कि इसी प्रकार से जीवन बिताना प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिये। आप के जीवन की घटनाओं से हमें यह पता मिलता है कि एक व्यक्ति का

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नैतिक, आत्मिक, शारीरिक तथा सामाजिक जीवन किस प्रकार बलवान और चारित्रवान हो सकता है।

आप का व्याख्यान हृदयग्राही तथा ओजस्वी भाषा में होता है जिस में सारगर्भित धार्मिक भाव लबालब भरे होते हैं। आप की वाक्पटुता से आकर्षित हो कई व्यक्तियोंने सांसारिक प्रलोभनों तथा कुवृत्तियों का निरोध किया है। आप के वचनामृतों के पान से कितना जैन समाज का उपकार हुआ है वह बताना अकथनीय हैं। आपने मारवाड़ जैसी विकट भूमि में अनेक वादियों के बीच विहार कर एकेले सिंह की माफिक जैनधर्म और जैन ज्ञान का बहुत प्रचार किया है। आप के व्याख्यान के मुख्य विषय ज्ञान प्रचार, मिथ्यात्व त्याग, समाज सुधार, विद्याप्रेम, जैनधर्म का गौरव, आत्मसुधार, अध्यात्मज्ञान, सदाचार, दुर्व्यसन त्याग तथा अहिंसा प्रचार है। आप का भाषण मधुर, हृदयग्राही, ओजस्वी चित्ताकर्षक, प्रभावोत्पादक एवं सर्व साधारण के समझने योग्य भाषा में होता है। त्याग की तो आप साक्षात् मूर्त्ति हैं। ज्ञान प्रचार द्वारा आत्महित साधन करना आप के जीवन का परम पवित्र उद्देश है। अर्वाचिन समय में जैन साहित्य के अन्वेषण प्रकाशन आदि अल्प समय में जितनी प्रवृत्ति आपने की है शायद ही किसी औरने की हो।

किस किस प्रान्त में आपने कितना कितना उपकार किया है इसका वर्णन पाठक निम्न लिखित चातुर्मास के वर्णन से मालूम करेंगे। पूर्ण वर्णन तो इस संक्षिप्त परिचय में समाना असम्भव है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विक्रम सं. १९६४ का चातुर्मास [सोजत ।]

सब से प्रथम का चातुर्मास आपने सोजत में किया । आप स्वामी फूलचंदजी के साथ में थे। सब से प्रथम आपने यही आवश्यक समझा कि जब तक जैन साहित्य का ज्ञान नहीं होगा तब मुझ से उपदेश देने का कार्य कैसे हो सकेगा । इसी हेतु से आप साहित्य के अध्ययन में प्रारम्भ से ही तत्पर हुए ।

वैसे आप पर सरस्वती की बचपन से ही विशेष कृपा थी, जिस बात को आप पढ़ते थे वह आप को शीघ्र याद हो जाती थी परिभाषा तथा नित्य के व्यवहार के लिये आपने सब से प्रथम थोकड़े याद करने शुरु किये । बातकी बात में आपको ४० थोकड़े+ स्मरण हो गये । तत्पश्चात् आपने सूत्र याद करने प्रारम्भ किये । प्रखर स्मरण शक्ति के कारण आपने बृहत्कल्प सूत्र सहज ही में मुखाग्र कर लिया ।

केवल पढ़ने की ओर ही आपकी रुचि हो यह बात नहीं थी, आप इस मर्म को भी अच्छी तरह जानते थे कि कठोर कर्मों का क्षय बिना तपस्या किये होना असम्भव है अतएव आपने अपने सुकुमार शरीर की परवाह न कर तपस्या करनी प्रारम्भ की जो इस प्रकार थी । अठाई १, पञ्चोपवास १, तेले ८,

---

+ जैन शास्त्रों में जो तत्वज्ञान का विषय है उसको सरल भाषामें ग्रथित कर एक प्रकरण (निबन्ध) बनाके उसे कण्ठस्थ कर लेना फिर उसपर खूब मनन करना उसका नाम स्थानकवासियोंने थोकड़ा रक्खा गया था ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बेले १०, तथा दो मास तक तो आपने एकान्तर तप आराधन किया था।

सदुपदेश सुनाना ही साधुओं का कर्त्तव्य है, यह जान कर आपने १९ दिवस तक श्री दशवैकालिक सूत्र को व्याख्यान में पढ़ा। आपकी व्याख्यान शैली की मनोहरता के कारण श्रोताओं की तो भीड़ लगी रहती थी।

चातुर्मास बीतने पर आपने सोजत से ब्यावर, खरवा तक विहार किया। फिर वहाँ से पीपाड़ बीसलपुर हो आपके कुटुम्बियों से आज्ञा प्राप्त कर आप पुनः ब्यावर पधारे। पश्चात् आपने अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, छाडलुं, टोंक, माधोपुर, कोटा, बूँदी, रामपुरा, भानपुरा, जावद, नीमच, निम्बाडा चित्तोड़, भीलाडा, हमीरगढ़, ब्यावर, पीपाड, नागोर और बीकानेर तक भ्रमण किया। आपके सदुपदेश के फलस्वरुप कई लोगोंने जीवनभर माँस मदिरा त्यागने का प्रण किया था। इस वर्ष के प्रथम पर्यटन में आपको अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़े। एक बार तो ऐसी घटना हुई कि आप बाल बाल बचे। अटूट साहस एवं धैर्यताने ही आपके जीवन की रक्षा की। अपने पुरुषार्थ के बल से आपने, सारी कठिनाइयों को तृणवत् समझ कर धर्म प्रचार के कार्य में रुचि पूर्वक भाग लिया।

विक्रम सं. १९६५ का चातुर्मास (बीकानेर)।

सोजत में गत चातुर्मास में आपने फूलचन्द्रजी के पास ज्ञा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नाभ्यास किया था किन्तु इस वर्ष आपने बीकानेर में पूज्यजी के साथ में रहते हुए विशेष ज्ञानाभ्यास किया। स्मरण शक्ति के विकसित होनेके कारण जो कार्य दूसरों के लिये क्लिष्ट प्रतीत होता है वह आपके लिये बिल्कुल सरल था। इस चातुर्मास में आपने २१ थोकड़े कण्ठस्थ किये तथा आचारंग सूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र का मननपूर्वक अध्ययन (वाचना) किया। शेष रहे उत्तराध्ययन के अध्ययनों को भी बाद में आपने कंठाग्र कर लिया।

तपस्या का सिलसिला उसी प्रकार जारी रहा। तपस्या करना स्वास्थ्य और आत्मकल्याण दोनों के लिये उपयोगी है इसी हेतु से आपने एक शूरवीर की तरह इस वर्ष के चातुर्मास में अन्य तपस्वी साधुओं की वैयावच्च करते हुए भी इस प्रकार तपस्या की, अठाई १, पचोला १, तेले ६, बेले ७ तथा साथ में आपने कई फुटकल उपवास भी किये।

बीकानेर जैसे बड़े नगरकी बृहत् परिषद में व्याख्यान देने का अवसर आप श्री को १९ दिन तक मिला, कारण पूज्य श्री रुग्णावस्था में थे। यद्यपि यह दूसरा ही वर्ष दीक्षित हुए हुआ था तथापि आपने निर्भीकता पूर्वक ऐसे ढंग से व्याख्यान दिया कि सब को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि एक नवदीक्षित साधु अपने थोड़े समय के अनुभव से किस प्रकार प्रभावोत्पादक अभिभाषण देते हैं। सब को आपके व्याख्यान से पूरा संतोष हुआ।

चातुर्मास व्यतीत होनेपर आप बीकानेर से नागौर, डेह,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कुचेरा, रूण, बडलू, बनाड, जोधपुर तथा सलावास आदि के लोगों को उपदेशामृत का पान कराते हुए पाली पहुँचे। इस पर्यटन में भी आप एकान्तर तपस्या के साथ साथ ज्ञानाभ्यास भी निरन्तर करते रहे।

वि. सम्वत् १९६६ का चातुर्मास (जोधपुर)।

आपश्रीने अपना तीसरा चातुर्मास मारवाड़ राज्य की राजधानी जोधपुर में बिताया। फूलचंदजी के पास ही आप रहे। उधर ज्ञानाभ्यास तो चल ही रहा था। जिस जिस क्रम से आपने श्रुतामृत का आस्वादन किया, आप की अभिलाषा अध्ययन की ओर बढ़ती गई। आपने इस वर्ष के चातुर्मास में निम्न प्रकार से स्वाध्याय किया। ४० थोकड़े कंठाग्र तो आपने सदा की तरह किये ही परन्तु इस वर्ष आपने श्रुतज्ञान के अध्ययन में विशेष प्रवृत्ति रक्खी। नन्दीजी सूत्र आपने सहज ही में कण्ठस्थ कर लिया। क्यों नहीं! जिस व्यक्ति पर इस प्रकार सरस्वती की महान् कृपा होती है वह अव्वल दर्जे का सौभाग्यशाली ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न में क्यों नहीं तल्लीन रहे! इतना ही नहीं इस के अतिरिक्त सूयगडांग सूत्र, ठाणायांग सूत्र, समवायंग सूत्र, प्रश्नव्याकरण सूत्र, निशीथ सूत्र, व्यवहारसूत्र, वृहत्कल्पसूत्र, दशश्रुत स्कंध सूत्र और आवश्यक सूत्र का अध्ययन (वाचना) किया सो अलग। धन्य! आपकी मानसिक शक्ति को।

जिस प्रकार आपने इस वर्ष ज्ञानाराधन में कमाल कर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिया उसी प्रकार तपस्या में भी अपूर्व वृद्धि की। आपने यकायक मासखमण तप का आराधन निर्विघ्नपूर्वक किया। इस के साथ तेले ३ तथा एक मास तक एकान्तर तप किया। सचमुच कर्म काटने को कटिबद्ध होकर आपने अलौकिक वीरता का परिचय दिया।

व्याख्यान के अन्दर आप भावनाधिकार पर सुमधुर वाणी से श्रोताओं के शंकाओं की खूब निवृति करते थे। इस वर्ष अपने आधे चातुर्मास अर्थात् दो मास तक धारा प्रावादिक उपदेश दिया।

जोधपुर नगर से विहार करके आप सालावास, रोहट, पाली, बूसी, नाडोल, नारलाई, देसूरी होकर पुनः पाली पधारे। वर्ष के शेष महीनों में आपने सोजत, सेवाज बगड़ी चण्डावल जेतारण तथा बलूँदा और कालू में पधार कर ज्ञानोपार्जन तथा तपश्चर्या करते हुए भी उपदेशामृत का पान कराया।

विक्रम सं. १९६७ का चातुर्मास (कालू)।

इस बार आपने चतुर्थ चातुर्मास कालू (आनन्दपुर) में अकेले ही किया। इस प्रकार अकेले रहने का कारण विशेष था। आत्मकल्याण के हित ही आपने इस प्रकार की योजना की थी। इस चातुर्मास में भी आप का ज्ञानाभ्यास पहले की तरह जारी था। आपने २५ थोकड़े निशीथसूत्र व्यवहारसूत्र वगैरह इस वर्ष भी कण्ठस्थ किये तथा निम्नलिखित आगमों का अध्ययन तो मनन पूर्वक किया—उपवाईजी, रायपसेणीजी, जम्बू-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

द्वीप पन्नति, ज्ञातासूत्र, उपासक दशांग, अणुत्तरोववाई, अन्तगढ़ दशांग, पांच निरियावलका सूत्र और विपाक सूत्र। ज्यों ज्यों आप आगमों का अध्ययन करते रहे त्यों त्यों आप को ज्ञान की जिज्ञासा बड़ी। आप का सारा समय इसी प्रकार व्यतीत होता रहा। एक के बाद दूसरा इस प्रकार व्यवस्थापूर्वक आपने अनेक आगमों का अवलोकन किया।

जो क्रम आप के ज्ञानाभ्यास का था वही क्रम तपस्या का भी रहा। इस वर्ष कालू में भी आप तपस्या करते रहे जो इस प्रकार थी। अठाई १, पचोले २, तेले ८ तथा आपने एकान्तर उपवास दो मास तक किये। इस प्रकार निर्जरा करते हुए आपने अतुल धैर्य का परिचय दिया। आप की लगन का वर्णन करना अकथनीय है। जिस कार्य में आप हाथ डालते हैं उस में अन्त-तक स्थिर रहते हैं।

इस ग्राम में आप कई बार मिलाकर लगभग आठ मास रहे जिस में १२ सूत्र व्याख्यान में वांचे। इस के अतिरिक्त समय समय पर आपने कई चरित्र सुना कर भी कालू निवासियों की ज्ञान पिपासा को अच्छी तरह से शांत किया। इस पिपासा को शांत करने में आपने ऐसी खूबी से काम लिया कि वे लोग अधिक श्रुतज्ञान का आस्वादन करना चाहने लगे। ज्यों ज्यों आपने ज्ञानपिपासा शान्त करने का प्रयत्न किया त्यां त्यां उनकी जिज्ञासा अधिक बढ़ती ही गई।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कालू से विहार कर आप लाम्बिया, कैकीन हो अजमेर होते हुए ब्यावर पधारे। वहाँ से विहार करते करते आपने निम्न लिखित ग्राम और नगरों में पधार कर धर्मोपदेश दिया:—रायपुर, झूटा, पीपलिया, चंडावल, सोजत, पाली, पीपाड़, नागोर और बीकानेर।

विक्रम सं. १९६८ का चातुर्मास (बीकानेर)।

इस वर्ष आपश्री का चातुर्मास दूसरी बार बीकानेर में हुआ। यहाँ आपका यह पाँचवा चातुर्मास था। स्वामी शोभालालजी के आप साथ थे। आपका ज्ञानाध्ययन निरन्तर चालू था। यह एक स्वाभाविक नियम है कि जिस व्यक्ति की धुन एक बार किसी काम में सोलह आना लगजाती है फिर वह यदि पुरुषार्थी है तो उस कार्यको पूरा करके छोड़ता है इस बार भी आपका ज्ञानाभ्यास का क्रम पहले की भांति असाधारण ही था। स्वामीजी की सेवा भक्ति करते हुए आपने १०० थोकड़े तत्वज्ञान के याद करने के साथ ही साथ श्री भगवतीजी सूत्र, पन्नवणा सूत्र, जीवाभिगम सूत्र, अनुयोग द्वार सूत्र और नंदीसूत्र की आपने वांचना की। आप सदा ज्ञान प्राप्ति में ही आनंद मानते रहे हैं तथा आपने अपने जीवन का एक उद्देश ज्ञान ग्रहण तथा ज्ञान प्रचार करना रक्खा है। इस में आप श्री को वांछनीय सफलता भी मिली है।

इस वर्ष आपने चातुर्मास में इस प्रकार तपस्या की—पंचोला

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१, तेले ३, तथा बेले ८। इसके अतिरिक्त छुटकर उपवास भी इस बार आपने अनेक किये।

आपश्रीने कई अर्सो तक व्याख्यान में भी सूत्रजी फरमाते रहे। आपका भाषण प्रकृति से ही रोचक तथा तत्परता उत्पन्न करनेवाला था। उपदेश श्रवण कर अपने अज्ञानांधकार को दूर करने के हेतु से अनेक श्रोता निरंतर व्याख्यान श्रवण करने का लाभ उठाते थे। आपकी व्याख्यान देने की शक्ति ऐसी उच्च कोटि की है कि श्रोता का मन प्रफुल्लित होकर आनंदसागर में गोते लगाने लगता है। अनेक श्रावकों को थोकड़े सिखाने का कार्य भी आपने ज़ारी किया।

आप बीकानेर से विहार कर नागोर मेड़ता कैकीन कालू होते हुए ब्यावर और अजमेर के निकटवर्ती स्थलों में उपदेशामृत की वर्षा करते आप खास अजमेर भी पधारे थे। इस भ्रमण में आपने कई भव्य आत्माओं का उद्धार कर उन्हें सत्पथ पर लगाया। जिस ग्राम में आप पधारते थे जनता एकत्रित हो जाती थी तथा आपके मुख मुद्रा की अलौकिक कान्ति से आकर्षित हो अपने को धर्म पालन करने में समर्थ बनाती थी।

वि. संवत् १९६९ का चातुर्मास (अजमेर)।

इस वर्ष में आपश्री का छठा चातुर्मास राजस्थान के केन्द्र नगर अजमेर में हुआ। वहाँ आप और लालचंदजी आदि ९ साधु ठहरे हुए थे। वैसे तो आप बाल वय से ही ज्ञानोपार्जन में तल्लीन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

थे तथापि पिछले ५ वर्षों में आपने साधु होकर तो ज्ञानाभ्यास में कमाल कर दिखलाया। आपको इस पंथ पर कई भर्म भी प्रकट होने लगे। आपने इस वर्ष में ज्ञान जिज्ञासुओं को पढ़ाने का कार्य भी शुरु कर दिया। भारत वर्ष के लोगों की यह साधारण टेव है कि थोड़ा ज्ञान पाते ही वे गुमानी हो जाते हैं तथा अपने को अपने दूसरे साथियों में चार इंच ऊँचा समझते है पर आपश्री को तो घमंडने छूआ तक भी नहीं। आपका उद्देश केवल ज्ञान सञ्चय करना ही नहीं अपितु ज्ञान प्रचार करना भी था। इसी कारण से इस चातुर्मास में आपने कई लोगों को श्री भगवती सूत्र की वाचना दी। सेठजी चन्दनमलजी व लोढाजी ढड्ढाजी और सिंधिजी वगैरह आपकी वाचना पर बड़े ही मुग्ध थे। इसके अतिरिक्त आपने थोकड़े लिखने का कार्य भी इस चातुर्मास में प्रारम्भ कर दिया। साथ ही कई श्रावकों को भी ज्ञान सिखाना प्रारम्भ किया।

इस चातुर्मास में आपने तपस्या इस प्रकार की:—अठाई १, पचोला १, तेला ५। छुटकर उपवास तो आपने कई किये थे।

व्याख्यान में आपश्री कइ समय तक प्रातःकाल श्री ज्ञाताजी सूत्र तथा मध्याह्न में श्री भगवती सूत्र की वाचना किया करते थे। व्याख्यान में तो उपदेश की झड़ी लगजाती थी मानो ज्ञान की पीयूष वर्षा हो रही हो।

अजमेर से आप सीधे ब्यावर पधारे। इस नगर में भी आप व्या-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ख्यान दिया करते थे आप इस नगर में पधारते थे तब लोग कहते थे कि सूत्रों की जहाज आई है। ब्यावर से विहार कर आप श्रीबर, रायपुर, सोजत, बगडी, सेवाज, कंटालिया, पाली, बूसी, नाडोल, नारलाई, देसूरी, घाणेराव, सादड़ी, बाली तथा शिवगञ्ज होकर पुनः पाली पधारे। इस बीच में आपकी श्रद्धा शुद्ध होने लगी। यद्यपि आप स्थानकवासी थे पर अंधश्रद्धा के त्यागने की अभिलाषा उत्पन्न हो चुकी थी फिर क्या देर थी? आपकी, सोध-खोज इस विषयपर थी कि मूर्त्ति पूजा से क्या लाभ दिन व दिन यह है, जिज्ञासा बढ़ रही थी और आप विशेषतया इसी की खोज में अन्वेषण किया करते थे कि सत्य वात क्या है? शास्त्र क्या फरमाते है? इस कारण समुदाय में कुछ थोड़ी बहुत चर्चा भी फैली हुई थी कर्मचन्दजी कनकमलजी शोभालालजी और हमारे चारित्रनायक गयवरचन्द्रजी एवं इन चारों विद्वान मुनियों की श्रद्धा मूर्त्तिपूजाकी ओर झुकी हुई थी। पूज्यजीने इन को समझाने का बहुत प्रयत्न किया पर सत्य के सामने आखिर वे निष्फल ही हुए। आपश्री पूज्यजी के साथ जोधपुर पधारे। वहाँसे गंगापुर चातुर्मास का आदेश होने से पाली, सारण, सिरीयारी और देवगढ़ होते हुए आप गंगापुर पधारे।

वि. सं. १९७० का चातुर्मास (गंगापुर)।

आपश्री का सातवाँ चातुर्मास गंगापुर में हुआ। आपने ज्ञानाभ्यास में इस वर्ष पंच संधि को प्रारम्भ किया तथा तपस्या इस प्रकार की:-अठाई १, पचोला १, तेला ३, छुटकर कई उपवास।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

व्याख्यान के अन्दर आपश्री भगवतीजी सूत्र सुनाते थे तथा ऊपर से पृथ्वीचन्द्र गुणसागर का रास रोचकतापूर्वक सुनाते थे। श्रोताओं की खासी भीड़ लगजाती थी।

आपश्री के जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन करानेवाला एक कार्य भी इसी वर्ष हुआ। देवयोग से आपश्रीने यहाँ के प्राचीन भण्डार के साहित्य की खोजना की। आप को एक रहस्य ज्ञात हुआ। श्री आचारांग सूत्र की चतुर्दश पूर्वधर आचार्य भद्रबाहु-सूरिकृत निर्युक्ति में तीर्थ की यात्रा तथा मूर्त्ति पूजा का विवरण पढ़कर आप के विचार दृढ़ हुए। शुद्ध श्रद्धा के अङ्कुर हृदय में वपन हुए फिर तो स्फुटित होने की ही देर थी।

वहाँपर तेरहपन्थियों को भी आपने ठीक तरहसे पराजित किया था और कई श्रावकों की श्रद्धा भी मूर्त्ति पूजा की ओर झुका दी थी। यहाँ से विहारकर आप उदयपुर पधारे परन्तु आंखों की पीड़ा के कारण आप आगे शीघ्र न पधार सके। इसी कारण से आप ३½ साढे तीन मास पर्यंत इसी नगर में ठहरे। व्याख्यान में श्री संघ की अत्याग्रह से श्री जीवाभिगम सूत्र बांचा जा रहा था। विजयदेव के अधिकार में मूर्त्ति पूजा का फल यावत् मोक्ष होने का मूल पाठ था। साधु होकर आप छली न बने। लकीर के फकीर न होकर सरल स्वभाव से आपने जैसा मूल पाठ व अर्थ में था सब स्पष्ट कह सुनाया। उपस्थित जनसमुदाय में कोलाहल मच गया। अंधभक्तों के पेट में चूहे कूदने लगे। लगे वे सब जोरसे हल्ला मचाने। आपने सूत्र के पाने शेठजी नन्दलालजी के सामने रक्ख दिये और उन्होंने सभा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मे सुना दिया जिससे आम जनता को यह ख्याल हो गया कि जैन सूत्रों मे मूर्त्ति पूजा का विधिविधान जरूर है पर कितनेक लोगोंने यह शिकायत भीलाड़े पूज्यजी के पास की। वहाँ आज्ञा मिली कि शीघ्र रतलाम पहुँचो। तदनुसार उठाड़ा, भींडर, कानोड़, सादड़ी (मेवाड़) छोटी सादड़ी, मन्दसौर जावरा होते हुए आप रतलाम पहुँच गये।

वहाँ अमरचंद्रजी पीतलिया से भी मूर्त्ति पूजा के विषयपर सूक्ष्म चर्चा चलती रही। आपने सिद्धांतोंके ऐसे पाठ बतलाये कि सेठजीको चुपचाप होना पड़ा। आप वापस जावरे पधारकर पूज्यजी से मिले। आप को पूछनेपर मूर्त्ति के विषय में केवल गोलमाल उत्तर मिला। इसी सम्बन्ध में आप नगरी में शोभालालजी से मिले उन की श्रद्धा तो मूर्त्ति पूजा की ओर ही थी। इस के पश्चात् आप छोटी सादड़ी पधारे। इसी बीच में तेरहपंथियों के साथ शास्त्रार्थ हुआ उन्हें पराजित कर आपश्रीने अपनी बुद्धिबलसे अपूर्व विजय प्राप्त की थी।

विक्रम संवत् १९७१ का चातुर्मास (छोटी सादड़ी)।

आपश्री का आठवाँ चातुर्मास मेवाड़ प्रान्त के अन्तर्गत छोटी सादड़ी में हुआ। जिस सोध की धुन आप को लगी हुई थी उस में आप को पूर्ण सफलता इसी वर्ष में प्राप्त हुई। स्थानीय सेठ चन्दनमलजी नागोरी के यहाँ से ज्ञाता, उपासकदश, ऊपाई, भगवती और जीवाभिगम आदि सूत्रों की प्रतियाँ लाकर आपने उनकी टीका पर मननपूर्वक निष्पक्षभाव से विचार किया तो आप को ज्ञात हुआ कि जैन सिद्धान्त में–मूर्त्ति पूजा मोक्ष का कारण है। आपने इसी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सम्बन्ध में त्रिषट्शलाका पुरुष चरित्र, जैनकथा रत्नकोष भाग आठ उपदेश प्रासाद भाग पाँच तथा वर्धमान देशना नामक ग्रंथों का भी अध्ययन कर डाला अर्थात् उस चातुर्मासमें लगभग एक लक्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया था तिस पर भी तपस्या इस प्रकार जारी रही थी। पञ्च उपवास १, तेले ३ तथा फुटकल तप। इस प्रकार ज्ञानाभ्यास के साथ तपश्चर्या का कार्य भी जारी था, यद्यपि आप इस वर्ष रुग्ण रहे थे।

व्याख्यान में आपश्री रायपसेणीजी सूत्र बांच रहे थे। कई श्रावकोंने रतलाम पूज्यजी के पास प्रश्न भेजे किन्तु पूज्यजी की ओर से अमरचंदजी पीतलियाने ऐसा गोलमोल उत्तर लिखा कि जिससे लोगों की अभिरूचि मूर्त्ति पूजा की ओर झुक गई।

सादड़ी छोटी के गाँवों में होते हुए आप गंगापुर पधारे जहाँ कर्मचंदजीस्वामी विराजते थे। आगे ६ साधुओं सहित आप देवगढ़ बला कुकडा होते हुए ब्यावर पधारे। यहाँ पर भी मूर्त्ति पूजा का ही प्रसंग छिड़ा। इस के बाद आप बर, बरांटिया निंबाज, पीपाड़, बिसलपुर होते हुए जोधपुर पधारे। आप के व्याख्यान में मूर्त्ति पूजा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर ही अधिक होने लगे। इस चर्चा में आपने साफ़ तौरपर फरमा दिया कि जैन शास्त्रों में स्थान स्थान मूर्त्ति पूजा का विधान और फल बतलाया है। अगर किसी को देखना हो तो मैं बतलाने को तैय्यार हूँ। अगर उस सूत्रों के मूल पाठ को न माने या उत्सूत्र की परूपना करने वालों को मैं मिथ्यात्वी समझता हूँ उनके साथ मैं किसी प्रकार का व्यवहार रखना भी नहीं चाहता हुँ यह विषय यहाँ तक चर्चा गई कि आप

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एकले रहना भी स्वीकार कर लिया। इसपर साथ के साधुओं ने कहा कि हम भी जानते हैं कि जैन शास्त्रोंमें मूर्त्ति पूजा का उल्लेख हैं पर हम इस ग्रहण किया हुए वेष को छोड़ नहीं सक्ते है। बस इसी कारण से आप उन का साथ त्याग वहाँसे महामन्दिर पधारगये। वहाँसे तिंवरी गये वहाँपर श्रीयुत् लूणकरणजी लोढ़ा व आशकरणजीमुहत्ता ने आपको सहयोगदिया। तिंवरी के स्थानकवासियों की आग्रह से चातुर्मास तिंवरी मे ही होना निश्चय हुआ. तथापि आप कई श्रावकों के साथ ओशियों तीर्थकी यात्रा के लिये पधारे। यहाँपर परम योगिराज मुनिश्री रत्नविजयजी महाराजसे भेंट हुई। आप श्रीमान् भी १८ वर्ष स्थानकवासी समुदाय में रहेहुए थे। वार्तालाप होनेसे परस्पर अनुभव ज्ञान की वृद्धि हुई। हमारे चरित्रनायकजीने दीक्षाकी याचना की इसपर परमयोगिराज निस्पृही गुरुमहाराजने फरमाया कि तुम यह चातुर्मास तो तिंवरी करो और सब समाचारियों को पढ़लो ता कि फिर अफसोस करना नहीं पड़े। आपश्री करीबन् एक मास उस निवृति दायक स्थान पर रहे। उस प्राचीन तीर्थका उद्धार तथा इस स्थान पर एक छात्रालय—इन दोनों कार्यों का भार गुरुमहाराजने हमारे चरित्रनायकजी के सिर पर डालदिया गया और आपश्री इनकार्यों कों प्रवृत्ति रूप में लाने के लिये बहुत परिश्रम भी प्रारंभ कर दिया। मुनिजीने वहाँपर स्तवन संग्रह पहला भाग और प्रतिमा छत्तीसी की रचना भी करी थी।

विक्रम संवत् १९७२ का चातुर्मास (तिंवरी)।

मुनि श्री रत्नविजयजी महाराज के आदेशानुसार आपने अपना नववाँ चातुर्मास तिंवरी में किया। व्याख्यान में आप श्री

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भगवती जी सूत्र पर इस प्रकार सतर्क व्याख्या करते थे कि श्रोताओं के मनसे संदेह कोसों दूर भागता था। आवश्यक्ता को अनुभव कर आपने संवेगी आम्नाय का प्रतिक्रमण सूत्र शीघ्र ही कंठाग्र करलिया आपने उपदेश सुनाकर कई भव्य जनों को सत् पथ बताया।

पाठकों को ज्ञात होगा, आपश्री जिस प्रकार अध्ययन करने में परिकर से सदा प्रस्तुत रहते थे उसी प्रकार आप साहित्य संदर्भ कर ज्ञानका प्रचार भी सरल उपाय से करना चाहते थे। इस चातुर्मास में तीन पुस्तकें सामयिक आवश्यक्तानुसार आपने रचीं, जिनके नाम सिद्धप्रतिमामुक्तावली, दान छत्तीसी और अनुकम्पा छत्तीसी थे।

जब सादड़ी मारवाड़ के श्रावकोंने प्रतिमा छत्तीसी प्रकाशित करगई तो स्थानकवासी समाज की ओर से आक्षेप तथा अश्लील गालियों की वृष्टि शुरु की गई थी। आप की इस रचना पर वे अकारण ही चिढ़ गये क्योंकि उनकी पोल खुल गई थी।

तिंवरी से बिहार कर आप ओशियों पधारे। वहाँ पर शांत मूर्त्ति परमयोगीराज निरापेक्षी मुनि श्री रत्नविजयजी महाराज के पास मौन एकादशी के दिन पुनः (जैन) दीक्षा ली और जैन श्वेताम्बर मूर्त्ति पूजक श्री संघ की उसी दिन से रात दिवस सेवा करने में निरत रहते हैं। गुरुमहाराज की आज्ञा से आपने उपकेश गच्छ की क्रिया करना आरम्भ की कारण इसी तीर्थपर आचार्य रत्नप्रभसूरिने आप के पूर्वजों को जैन बनाया था। धन्य है ऐसे निर्लोभी महात्मा को कि जो शिष्य की लालसा त्याग पूर्वाचार्यों के प्रति कृतज्ञता बतला-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ने को पथप्रदर्शक बने। आपने दीक्षित होते ही शिक्षा सुधार की ओर खूब लक्ष्य दिया और तत्काल गुरुमहाराज की कृपा से ओशियों में जैन विद्यालय बोर्डिंग सहित स्थापित करवाया और उस के प्रचार में लग गये। बिना छात्रों की पर्याप्त संख्या के विद्यालय का कार्य शिथिल रहेने लगा। अतएव आपने आसपास के अनेक गाँवों में भ्रमण कर अनेक विद्यार्थियों को इस छात्रावास में प्रविष्ट कराए। इस कार्य में आपश्रीने तथा मुनीम चुन्नीलालभाईने अकथनीय परिश्रम किया। लोगों में यह मिथ्याभ्रम फैला हुआ था कि ओशियों में जैनी रात्रि-भर ठहर ही नहीं सकता। आपने उपदेश दे मावापों को इस बातके लिये तत्पर किया कि वे अपने बालक इस विद्यालय में भेजें। फिर फलोधी श्री संघ के अति आग्रह करने पर आप को लोहावट होते हुए वहाँ पधारना पड़ा।

आपश्रीने सब से पहले ज्ञान प्रचार के लिये ज़ोर सौर से उपदेश दिया। फलस्वरूप में सेठ माणकलालजी कोचरने अपनी ओर से जैन पाठशाला खोलने का वचन दिया। आपश्री के समाचार स्थानकवासी साधु रूपचंदजी को मिलते ही वे ओशियों आ कर वेष परिवर्तन कर मुनिश्री की सेवामें फलोधी आए उन को पुनः दीक्षा दे अपना शिष्य बना आपश्रीने रूपसुन्दरजी नाम रक्खा। पूजा प्रभावना स्वामीवात्सल्य और वरघोडा वगैरह से जैन शासन की प्रभावना अच्छी हुई। उसी समय स्थानकवासी साधु धूलचन्दजी को संवेगी दीक्षा दे रूपसुन्दरजी के शिष्य बना के उन का नाम धर्मसुन्दर रखा गया था इस वर्ष में तिवरीवालों की तरफ से पुस्तकों के लिये सहायता भी मिली।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१००० श्री गयवरविलास ।

७००० प्रतिमा छत्तीसी ।

१००० सिद्धप्रतिमा मुक्तावलि ।

विक्रम संवत् १९७३ का चातुर्मास (फलोधी) ।

श्रावकों के आग्रह को स्वीकारकर आपश्रीने फलोधी कसबे में अपना दसवाँ चातुर्मास किया । लोगों के हृदय में उत्साह भरा था । चातुर्मासभर अपूर्व आनन्द बरता । प्रत्येक श्रावक प्रफुल्ल वदन था । व्याख्यान में आप 'पूजा प्रभावना वरघोडा दिवड़े ही समारोह के साथ' भगवतीजी सूत्र मनोहर वाणी से सुनाते थे । साथ ही आप शिक्षा प्रचार का उपदेश भी देते थे जिस के फलस्वरूप आषाढ़ कृष्णा ६ को वहाँ जैन पाठशाला की स्थापना हुई । साथ ही में दो और महत्वशाली संस्थाऐं स्थापित हुई जो उस समय मारवाड़ प्रान्त के लिये अनोखी बात थी । साहित्य की ओर रुचि आकर्षित करने के उद्देश से फलोधी श्री संघ की ओर से रु. २०००) को फण्ड से "श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला" की स्थापना बड़े समारोह से हुई । एक ही वर्ष में इस माला द्वारा २८००० पुस्तकें प्रकाशित हुई तथा जैन लाइब्रेरी की स्थापना करवा के नवयुवकों के उत्साह में वृद्धि की ।

१००० गयवर विलास दूसरी बार । २००० दादा साहब की पूजा ।
१०००० प्रतिमा छत्तीसी तीसरी बार । १००० चर्चा का पब्लिक नोटिस ।
२००० दान छत्तीसी । १००० पैंतीस बोल संग्रह ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२००० अनुकम्पा छत्तीसी ।	५००० देवगुरु वंदन माला ।
१००० प्रश्नमाला ।	१००० स्तवन संग्रह दूसरा भाग ।
१००० स्तवन संग्रह प्रथम भाग ।	१००० लिङ्ग निर्णय बहत्तरी ।

२८००० सब प्रतिऐं ।

फलोधीसे विहार कर । अखेचन्दजी वंदादि के साथ पोकरन लाटी हो जेसलमेर यात्रार्थ पधारे । वहाँ की यात्राकर अमृतसर लोद्रवाजी ब्रह्मसर की यात्राकर पुनः जैसलमेर पधारे । आपने अपनी प्रकृत्यानुसार वहाँ के प्राचीन ज्ञान भण्डार का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया जिसमें ताड़पत्रों पर लिखे हुए जैन शास्त्रों के अन्दर मूर्त्ति विषयक विस्तृत संख्या में प्रमाण मिल आये ! वहाँ से लौटकर आप फलोधी आये वहाँ से खीचन्द पधारे । वहाँपर एक बाई को आप के करकमलों से जैन दीक्षा दी तथा पूज्य श्रीलालजी से मुलाकात हुई पुनः फलोधी में भी मिलाप हुआ वहाँ से लोहावट पधारे स्तवन संग्रह प्रथम भाग दूसरीवार १००० कॉपी मुद्रित करवाई वहाँ से ओशियों तीर्थ आये वहाँ के बोर्डींग की व्यवस्था शिथिलसी देख आप को इस बात का बड़ा रंज हुआ । फिर आपने वहाँपर तीन मास टहरकर बड़े परिश्रम से वहाँ का सब इन्तजाम ठीक सिलसिलेवार बना के उस की नींव को मजबूत कर दी । आपश्री के प्रयत्न से श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्प-माला नामक संस्था स्थापित की जो आचार्य रत्नप्रभसूरि के उपकार की स्मृति करा रही है वहाँ से आप तिंबरी और जोधपुर पधारे ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विक्रम संवत् १९७४ का चातुर्मास (जोधपुर)

आपश्री का ग्यारहवाँ चातुर्मास जोधपुर में हुआ था। इस वर्ष आपने व्याख्यान में श्री भगवतीजी सूत्र फरमाया था। आप के व्याख्यान में खासी भीड़ रहती थी। आप की व्याख्यान पद्धति बड़ी प्रभावोत्पादक थी। श्रोता सदा सुनने को आतुर रहते थे। समझाने की प्रणाली इस कद्र उत्तम थी कि लोग आप के पास आकर अपने भ्रम को दूर कर सुपथ के पथिक बनते थे। इतना ही नहीं पर एक बाईको संसार से विमुक्त कर आपने उसे जैन दीक्षा भी दी थी।

इस चातुर्मास में आपने तपस्या इस भांति की थी। पचोला १, तेला १, इस के अतिरिक्त फुटकल तपस्या भी आप किया करते थे। तपस्या के साथ ज्ञान प्रचार के हित साहित्य में भी आप की अभिरुचि दिन प्रतिदिन बढ़ती रही। इस चातुर्मास में कई पुस्तकें तैयार करने के सिवाय निम्नलिखित पुस्तकें मुद्रित भी हुई।

१००० स्तवन संग्रह तृतीय भाग। ५०० डंके पर चोट।

चातुर्मास समारोहपूर्वक बिताकर आप सेलावास रोहट हो पाली पधारे। वहाँ बीमारी फैली हुई थी। वहाँ आपश्रीने यतिवर्य श्रीमाणिक्यसुन्दरजी प्रेमसुन्दरजी के द्वारा शान्तिस्नात्र पूजा बनवाई। फिर वहाँ से विहारकर आप बूसी, नाडोल, वरकाणा, खीमेल, धणी, मुंडारा होते हुए सादड़ी पधारे। यहाँ से स्तवन संग्रह प्रथम भाग तीसरी बार प्रकाशित हुआ। सादड़ी कसबे में आपने सार्वजनिक व्याख्यान भी दिये। यहाँ एक मास पर्यन्त

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ठहरकर आपश्रीने मेवाड़ की ओर पदार्पण किया। जोधपुरनिवासी भद्रिक सुश्रावक भंडारीजी चन्दनचन्दजी भी साथ थे। चतुर्विध संघ सह आपश्री भानपुरा और सायरे होते हुए उदयपुर पधारकर केशरीयानाथजी की यात्रार्थ पधारे। वहाँ से लौटकर आप पाल, ईडर, आमनगर और प्रान्तीज होते हुए अहमदाबाद पधारे। जब अहमदाबाद के श्रावकों को आप के पधारने की सूचना मिली तो वे विस्तृत संख्या में सम्मिलित हुए तथा उन्होंने मुनिश्री का नगर प्रवेश बड़े समारोह से स्वागत करते हुए करवाया। इस कार्य में यहाँ के मारवाड़ी संघने विशेष भाग लिया था। पुनः खेडा, मातर, संजीतरा, सुन्दरा, गम्भीरा और बडौदे होते हुए आप झगडियाजी तीर्थपर पधारे। वहाँ गुरुवर्य श्री रत्नविजयजी के आपने दर्शन किये। वहाँ से पंन्यासजी हर्षमुनिजी तथा गुरुमहाराज के साथ सूरत पधारे जहाँ आप का बड़ी धूमधाम से अपूर्व स्वागत हुआ।

विक्रम संवत् १९७५ का चातुर्मास (सूरत)।

आपश्री का बारहवाँ चातुर्मास गुरुसेवा में सूरत नगर के बड़े चौहट्टे में हुआ। व्याख्यान में आपश्री गुरु आज्ञा से भगवतीजी की वाचना सुनाते थे। यद्यपि आप इस समय मारवाड़ प्रान्त से दूर थे तथापि मारवाड़ के जैनियों के उत्थान की तथा ओशियों छात्रालय की चिन्ता आप को सदा लगी रहती थी। इसी हेतु आपने उपदेश देकर ओशियों स्थित जैन वर्धमान विद्या-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लय को बहुतसी सहायता पहुंचवाई। धन्य है ऐसे विद्याप्रेमी मुनिराज को! जो ऐसी आवश्यक संस्थाओं की सुधि समय समय पर लेते रहते हैं।

सूरत में रहे हुए कई लोगोंने इर्षा के वशीभूत हो यह आक्षेप किया कि मुनिश्रीजी भगवती वाचते है पर उन्होंने बड़ी दीक्षा किस के पास ली? इस पर गुरुमहाराजश्री रत्नविजयजी महाराजने आम व्याख्यान में फरमाया कि मुनि ज्ञानसुन्दरजी को मैंने बड़ी दीक्षा दी और उपकेश गच्छ की क्रिया करने का आदेश भी मैंने दिया अगर किसी को पूछना हो तो मेरे रूबरू आकर पूछ ले। पर ऐसी ताकत किस की थी कि उन शास्त्रवेत्ता महा विद्वान और परम योगिराज के सामने आके चूं भी करे।

हमारे चरित्रनायकजी की व्याख्यान और स्याद्वाद शैली से वस्तुधर्म प्रतिपादन करने की तरकीब जितनी गंभीर थी उतनी ही सरल थी कि अन्य दो उपाश्रय में श्रीभगवती सूत्र बांचा रहा था पर गोपीपुरा, सगरामपुरा, छापरियासेरी, हरीपुरा, नवापुरा और रांदेर तक के श्रावक बड़े चौहट्टे-आ-आ कर श्रीभगवती सूत्र का तत्वामृत पान कर अपनी आत्मा कों पावन बनाते थे।

इस चातुर्मास में हमारे चरितनायकजी की रचित १२००० पुस्तकें इस प्रकार प्रकाशित हुई।

५०० बत्तीस सूत्र दर्पण। १००० जैन दीक्षा।
१००० जैन नियमावली। १००० प्रभु पूजा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१००० चौराशी आशातना। १००० व्याख्याविलास प्रथम भाग।
१००० आगमनिर्णय प्रथमांक। १००० शीघ्रबोध प्रथम भाग।
१००० चैत्य वंदनादि । १००० ,, द्वितीय भाग।
१००० जिन स्तुति। १००० ,, तृतीय भाग।
५०० सुखविपाक मूल सूत्र।
१२००० कुल प्रतिएं।

इस चतुर्मास में आपश्रीने इस प्रकार तपस्या की। अठाई १, पचोला १, तेले ११। धन्य! आप कितनी निर्जरा करते हैं। जहाँ आप साहित्य सुधार के कार्य में संलग्न रहते हैं वहाँ काया की भी परवाह नहीं करते। मारवाड़ी जैन समाज कों सरल ज्ञान द्वारा ऐसें महात्माओंने ही जगृत किया है। इन के जीवन के प्रत्येक कार्य में दिव्यता का आविर्भाव दिख पड़ता है।

सूरत से विहार कर गुरुमहाराज की सेवा में आप कतार-ग्राम, कठोर, झगड़ियाजी तीर्थ आये, वहाँ से श्रीसिद्धगिरि की यात्रार्थ गुरुश्री से आज्ञा लेके अंकलेसर, जम्बुसर, काबी, गंधार, भड़ूँच, खम्भात्, धोलका, वला, सीहोर, भावनगर और देव होते हुए श्रीपालीताणाजी पधार कर सिद्धगिरि की यात्रा कर आपने मानवजीवन को सफल किया। जो सुरत में आपने मेझरनामा लिखना प्रारंभ किया था वह अनुभव के साथ इसी पवित्र तीर्थ पर समाप्त किया था। फिर हमारे चरित नायकजी अहमदाबाद होते हुए खेड़ा मात्र में सदुपदेश सुनाते हुए पुनः झगड़ियाजी पधार गुरु महाराज की सेवा करने लगे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विक्रम संवत् १९७६ का चातुर्मास (झगडिया तीर्थ)।

आपश्रीने इस वर्ष अपना तेरहवाँ चातुर्मास एकान्त निस्तब्ध स्थान श्री झगडिया तीर्थ पर करना इस कारण उचित समझा कि यहाँ का पवित्र वातावरण अध्ययन एवं साहित्यावलोकन के लिये बहुत सुविधा जनक था। इसके अतिरिक्त यहाँ का जल वायु स्वास्थ्यप्रद भी था। पूर्वोक्त लाभ जान के गुरु महाराजने भी आज्ञा दे दी और आपने सीनोर में चातुर्मास किया इस ग्राम में श्रावकों के केवल तीन ही घर थे। इस चतुर्मास में आप संस्कृत मार्गोपदेशिका प्रथम भाग का अध्ययन कर गये। साथमें तपस्या भी उसी क्रम से जारी थी। अष्टोपवास १, पंचोले २, अठम ११, छठ ६ तथा कई उपवास भी हमारे चरितनायकजीने किये थे।

यद्यपि यहाँ के स्थानीय श्रावक अल्प संख्या में थे तथापि निकटवर्ती ४० गाँवों से प्रायः कई श्रावक पर्यूषण पर्व में आप श्री के व्याख्यान में सम्मिलित हुए। वरघोडे और स्वामीवात्सल्य का सम्पादन भी पूर्ण आनन्द से हुआ था तथा ज्ञान खाते के द्रव्य में आशातीत वृद्धि भी हुई। बंबई से सेठ जीवनलाल बाबू सपत्नी आकर यहाँ दो मास तक ठहरे तथा आप की सेवाभक्ति का निरन्तर लाभ लेते रहे।

इस वर्ष यह साहित्य आपश्री का बनाया हुआ प्रकाशित हुआ। १००० शीघ्रबोध चतुर्थ भाग। यही पञ्चम भाग १०००

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छठा भाग १००० तथा सातवाँ भाग १०००, दशवैकालिक मूल सूत्र १०००, मेझरनामा ३५०० गुजराती भाषा में। इस प्रकार कुल ८५०० प्रतिएँ प्रकाशित हुई।

गुरु महाराज का चातुर्मास सीनोर में था। गुरु महाराज जब संघ के साथ यहाँ पधारे तो आपश्री सामने पधारे थे। संघ का स्वागत खूब धामधूम से हुआ। गुरु महाराजने इच्छा प्रकट की कि मुनीम चुनीलाल भाई के पत्र से ज्ञात हुआ है कि ओशियां स्थित जैन छात्रावास का कार्य शिथिल हो रहा है अतएव तुम शीघ्र ओशियाँ जाओ, वहाँ ठहर कर संस्था का निरीक्षण करो। यद्यपि आप की इच्छा गुरुश्री के चरणों की सेवा करने की थी पर गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करना आपने अपना मुख्य कर्त्तव्य समझ पादरा, मातर, खेड़ा, अहमदाबाद, कडी, कलोल, शोरीसार, पानसर, भोंयणी, मेसाणा, तारंगा,* दांता, कुम्भारिया

---

* गुजरात विहारके बीच आचार्य श्री विजयनेमीसूरि आ० विजयकमलसूरि आ० विजयधर्मसूरि आ० विजयसिद्धिसूरि आ० विजयवीरसूरि आ० विजयमेघसूरि आ० विजयकमलसूरि आ० विजयनीतिसूरि आ० सागरानंदसूरि आ० बुद्धिसागरसूरि उपाध्यायजी वीरविजयजी उ० इन्द्रविजयजी उ० उदयविजयजी पन्यास गुलाबविजयजी पं० दानविजयजी पं० देवविजयजी पं० लाभविजयजी पं ललितविजयजी पं० हर्षमुनिजी शान्तमूर्त्ति मुनिश्री हंसविजयजी मु० कर्पूरविजयजी आदि करीबन् दो सौ महात्माओं से मिलाप हुआ। परस्पर स्वागत सम्मान और ज्ञानगोष्टि हुई कई महात्मा तो उपकेशगच्छ का नाम तक भी नहीं जानते थे अतः आपश्रीने नम्रता भाव से आचार्यश्री स्वयंप्रभसूरि और पूज्यपाद रत्नप्रभसूरि का जैन समाज पर का परमोपकार ठीक तौर से समझाया जिस से सब के हृदय में उन महापुरुषों के प्रति हार्दिक भक्तिभाव पैदा हुआ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आबू, सिरोही, शिवगंज, सांडेराव, गुन्दोज, पाली, जोधपुर, तिंवरी होते हुए ओशियाँ पधारे वहाँ का वातावरण देख आपको बहुत खेद हुआ। फिर—आपके परिश्रम व उपदेश से सब व्यवस्था ठीक हो गई। छात्रालय के मकान का दुःख भी दूर हो गया।

आपके पास वाली हस्तलिखित पुस्तकें तथा यतिवर्य लाभ-सुन्दरजी के देहान्त होनेपर उनकी पुस्तकें तथा अन्य छापे की पुस्तकों को सुरक्षित रखने के पवित्र उद्देश से ओशियों तीर्थपर आपने श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान भण्डार की स्थापना की तथा स्थानीय उपद्रव को प्राचीन समय में दूर करानेवाले आचार्य श्री ककसूरिजी महाराज के स्मरणार्थ वहाँ श्रीककांति लाइब्रेरी स्थापित की। दो मास तक आपने बोर्डिंग की ठीक सेवा बजाई पर आपश्री की अधिकता यह हैं कि इतने कार्य करते हुए भी किसी स्थानपर ममत्व के तंते में न फस कर बिलकुल निर्लेप ही रहते हैं बाद फलोधी संघ के आग्रह से आप लोहावट होते हुए फलोधी पधारे।

विक्रम संवत् १९७७ का चातुर्मास (फलोधी)।

आपश्री का चौदहवाँ चातुर्मास फलोधी नगर में हुआ। व्याख्यान में आपश्री भगवतीजी सूत्र बड़ी मनोहर वाणी से सुनाते थे। श्रोताओं का मन उल्लास से तरंगित हो उठता था। उनका जी व्याख्यानशाला छोड़ने को नहीं चाहता था। पुस्तकजी का जुलूस बड़े विराट् आयोजन से निकला था जिसकी शोभा देखते ही बनती थी। जिन्होंने इस वरघोड़े के दर्शन कर अपने नैत्र तृप्त किये वे वास्तव में बड़े भाग्यशाली थे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस चातुर्मास में आपने इस भाँति तपश्चर्या की थी जो सदा की तरह ही थी। पचोला १, अठ्ठम ३ तथा इसके अतिरिक्त कई उपवास भी आपश्रीने किये थे।

जितना परिश्रम और प्रेम मुनिश्री का साहित्य प्रचारकी ओर है उतना शायद ही और किसी मुनिराज का इस समय होगा। आप के द्वारा जितना साहित्य ग्रथित होता है वह सब का सब साधारण योग्यतावाले श्रावक के भी काम का होता है। यह आपके साहित्य की विशेषता है। अपने पांडित्य के प्रदर्शनार्थ आप कभी ग्रंथ को क्लिष्ट नहीं बनाते। इस वर्ष इतना साहित्य मुद्रित हुआ।

१००० शीघ्रबोध भाग ८ वाँ। १००० स्तवन संग्रह भाग २ रा दूसरी बार।

१००० नंदीसूत्र मूलपाठ। १००० लिङ्गनिर्णय बहत्तरी,,

१००० मेझरनामा हिन्दीसंस्करण। १००० स्तवनसंग्रह भा.३रा,,

२००० तीननिर्मायक उत्तरोंकाउत्तर। १००० अनुकंपा छत्तीसी ,,

१००० ओशियाँ ज्ञान भण्डार की सूची। १००० प्रश्नमाला ,,

१००० स्तवन संग्रह भाग १ चतुर्थ बार।

१००० तीर्थ यात्रा स्तवन।

१००० प्रतिमा छत्तीसी चतुर्थ बार। ५००० सुबोध नियमावली।

१००० दान छत्तीसी दूसरी बार। १००० शीघ्रबोध भाग १ दूसरी बार।

२१००० सब प्रतिऐं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस से स्पष्ट प्रकट होता है कि इस क्षेत्र में आपश्री एकेले होने पर भी कितनी तेजी से कार्य कर रहे हैं। आपने संगठन की आवश्यक्ता समझ कर यहाँ "जैन नवयुवक प्रेम मण्डल" की स्थापना की।

विक्रम संवत १९७८ का चातुर्मास (फलोधी)।

आपश्री का पंद्रहवाँ चातुर्मास भी कारण विशेष से पुनः इसी नगर में हुआ। व्याख्यान में आप नित्य प्रातःकाल उत्तराध्ययनजी सूत्र और आगमसार की गवेषणा पूर्वक वांचना करते थे। आपकी समझाने की शक्ति इस ढंग की थी जो संदेह को भेद डालती थी। आगमामृतका पान करा कर आपने परम शांति का साम्राज्य स्थापित कर दिया था। आप एक आगम पढ़ते समय अन्य विविध आगमों का इस प्रकार समयोचित वर्णन करते थे कि हृदय को ऐसा प्रतीत होता था मानो सारे आगमों की सरिता प्रवाहित हो रही है।

ज्ञानाभ्यास के साथ इस चातुर्मास में आपने इस प्रकार तपस्या भी की थी। तेले ५, छठ्ठ ३ तथा फुटकुल उपवास आदि।

पुस्तकों का प्रकाशन इस बार इस प्रकार हुआ। आपश्री की बनाई हुई पुस्तकें जैन समाज के सम्मुख उपस्थित हो रही थीं। आपके समय का अधिकाँश भाग लिखने में बीतता था। यह प्रयत्न अब तक भी अविरल रूप से जारी है। ऐसा कोई वर्ष नहीं बीतता कि कमसे कम ४–५ पुस्तकें आप की बनाई हुई प्रकट न हों–इस वर्ष की पुस्तकें—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१००० शीघ्रबोध भाग नवमाँ ।	१००० स्ववन संग्रह तीसरा
१००० ,, ,, दसवाँ ।	भाग तीसरी वार ।
१००० प्रतिमा छत्तीसी पाँचवी	१००० देवगुरु वन्दन माला ,, ।
वार (ज्ञान विलास में) ।	१००० लिङ्ग निर्णय बहत्तरी,, ।
१००० दान छत्तीसी । तीसरी वार ।	१००० जैन नियमावली ,, ।
१००० अनुकम्पा छत्तीसी ,, ।	१००० सुबोध नियमावली ,, ।
१००० प्रश्नमाला ,, ।	१००० प्रभु पूजा ,, ।
१००० स्तवन संग्रह प्रथम भाग	१००० चौरासी आशातना ,, ।
तीसरी वार ।	१००० चैत्यवंदनादि ,, ।
१००० ,, दूसरा भाग ,,	१०९० सझाय संग्रह I ,, ।
१००० उपकेशगच्छ लघु शब्दावली ।	१००० सुबोध नियम ,, ।
१००० जैन दीक्षा तीसरी वार ।	१००० व्याख्या विलास II
१००० व्याख्या विलास III	१००० ,, IV
१००० अमे साधु शा माटे थया ?	१००० ,, III
१००० राई देवसी प्रतिक्रमण	१००० बिनती शतक ।
१००० कक्का बत्तीसी ।	

२८००० कुल प्रतिऐं।

अठ्ठाई महोत्सव, बरघोडा, स्वामीवात्सल्य, पूजा, प्रभावना इत्यादि धर्मकृत्य बड़े समारोह से हुए। आपके उपदेश से जेसलमेर का संघ १००० यात्रियों सहित निकला था। इस संघ का कार्य आपकी व्यवस्था से निर्विघ्नतया सम्पादन हुआ था। आपकी यह बढ़ती धर्मद्रोहियों से नहीं देखी गई। उन्होंने कुछ अनुचित

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

काम आप को बदनाम करने के लिये किये पर अन्त में वही नतीजा हुआ जो होना चाहिये था। धर्म ही की विजय हुई। विघ्नसंतोषी नत मस्तक हुए। आपने इस वर्ष यहाँ श्रीरत्नप्रभाकर प्रेमपुस्तकालय नामक संस्था को जन्म दिया।

विक्रम-संवत १९७९ का चातुर्मास (फलोधी)।

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज को अपना सोलहवां चतुर्मास फलोधी करना पड़ा। आप श्री व्याख्यानमें श्री भगवतीजी सूत्र सुनाकर आगमों को सुगम रीतिसे समझाते थे। आपकी स्मरण शक्ति की प्रखरता पाठकों को अच्छी तरहसे पिछले अध्यायों के पठनसे ज्ञात हो गई होगी। आपकी इस प्रकार एक विषयपर चिरकाल की स्थिरता वास्तव में सराहनीय है। मिथ्यात्वके घोर तिमिरको दूर करने में आपकी वाक्सुधा सूर्य समान है। उस समय सारे मिथ्यात्वी आगमरूपी दिवाकर की उपस्थिति में उडुगण की तरह विलीन हो गये थे।

इस चतुर्मास में आपने पक्षोपवास १, तेले ३ तथा बेले २ किये थे। फुटकर उपवास तो आपने कई किये थे।

इस वर्ष निम्न लिखित पुस्तकें मुद्रित हुईं जिनकी जैन समाज को नितान्त आवश्यक्ता थी। विशेष कर मारवाड़ के लोगों के लिये इस प्रकार पुस्तकों की प्रचुरता होते देखकर किसे हर्ष नहीं होगा ? साधुओं का समागम कभी कभी ही होता है पर जिस घरमें एक बार किसी पुस्तकने प्रवेश किया कि वह ज्ञान

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करानेके लिये सदैव तैयार रहती है। न कभी इन्कार करती है न थकती ही है। इस वर्ष—

१००० शीघ्रबोध भाग ११ वाँ १००० शीघ्रबोध भाग १८ वाँ
१००० ,, ,, १२ वाँ १००० ,, ,, १९ वाँ
१००० ,, ,, १३ वाँ १००० ,, ,, २० वाँ
१००० ,, ,, १४ वाँ १००० ,, ,, २१ वाँ
१००० ,, ,, १५ वाँ १००० ,, ,, २२ वाँ
१००० ,, ,, १६ वाँ १००० ,, ,, २३ वाँ
१००० ,, ,, १७ वाँ १००० ,, ,, २४ वाँ
५००० द्रव्यानुयोग प्र. प्र. प्रथमवार १००० ,, ,, २५ वाँ
१००० द्रव्यानुयोग प्र. प्र. दूसरीवार १००० आनंदघन चौवीसी
१००० वर्णमाला। १००० हितशिक्षा प्रश्नोत्तर।
१००० तीन चतुर्मास–दिग्दर्शन। २५००० कुल प्रतिऐं।

यहाँ के श्री संघने उत्साहित करीबन् होकर ५०००) पांच हजार रुपये खर्च कर दिव्य समवसरण की रचना की थी। यह एक फलोधी की जनता के लिये अपूर्वावसर था। जैनधर्म की उन्नति में अलौकिक वृद्धि अवर्णनीय थी। श्रावकों का उत्साह सराहनीय था। आपश्रीने इन तीन वर्षों में ३७ आगमों की वाचना तथा १४ प्रकरण व्याख्यानद्वारा फरमाए थे। आपने इस वर्ष कई श्रावकों को धार्मिक ज्ञानाभ्यास भी कराया था। प्रतिक्रमण–प्रकरण और तत्वज्ञान ही आपके पढ़ाये हुए मुख्य विषय थे। फल स्वरूपमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आज फलोधी के श्रावक कर्मग्रन्थ और नयचक्र सार जैसे द्रव्यानुयोग के महान् ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद कर जनताकी सेवामें रक्ख चुके हैं फलोधी नगरमें लगातार आपको तीन चौमासो होनेसे धार्मिक सामाजिक कार्यो में बहुत सुधार हुआ। जनतामें नव चेतन्यताका प्रादुर्भाव हुआ जैसलमेरका संघ, समवसरण की रचना, अठाई महोत्सव, स्वामिवात्सल्य, पूजा प्रभावना और पुस्तक प्रचार में श्री संघने करीबन् रु ९०००० का खर्चाकर अनंत पुन्योपार्जन किया था इन तीनों चतुर्मासों का वर्णन संक्षिप्त में एक कविने इस प्रकार किया है।

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी के तीन चातुर्मास फलोधी नगर में हुए।

॥ दोहा ॥

अरिहन्त सिद्ध सूरि नमुं, पाठक मुनिके पाय ;
गुणियों के गुणगान से, पातिक दूर पलाय ॥ १ ॥

चाल लावनीकी।

श्री ज्ञानसुन्दर महाराज बड़े उपकारी–बड़े उपकारी।
मैं वन्दु दो कर जोड़ जाउँ बलिहारी। श्री ज्ञान०। टेर।

पँवार वंश से श्रेष्टि गोत्र कहाया।
वैद्य मुतों की पदवि राज से पाया॥
नवलमल्लजी पिता रुपाँदे माता।
वीसलपुरमें जन्म पाये सबसाता॥
विजय दशमि सेंतीस साल सुखकारी॥ श्री ज्ञान०॥ १॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गज सुपनासे जो नाम गयवर दीनो ।
साल चौपनमे विवाह आपको कीनो ॥
आठ वर्ष लग भोग संसार के भोगी ।
फिर स्थानकवासी में आप भये हैं योगी ।
त्रेसठ सालमें भए मुनिपद धारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ २ ॥

आगमपर पूरा प्रेम कण्ठस्थ कर राचे ।
तीस सूत्रोंपर टैबा सबको वांचे ॥
जाणी मिथ्या पन्थ सुमति घर आये ।
तीर्थओशियों रत्नविजय गुरु पाये ।
साल बहत्तर सुन्दर ज्ञान के धारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ ३ ॥

फलोधी चोमासों जोधपुरमें बीजो ।
सूरत गुरु के पास चौमासो तीजो ॥
सिद्धगिरी की यात्राको फल लीनो ।
चौथो चौमासो जाय झघडिया कीनो ॥
करे ज्ञान ध्यान अभ्यास सदा हितकारी ॥ श्री ज्ञान० ॥४॥

ग्राम नगर पुर पाटण विचरंत आये ।
गाजा बाजा से नगरे प्रवेश कराये ॥
धन भाग्य हमारे ऐसे मुनिवर पाये ।
साल सीतंतर चौमासो यहाँ ठाये ॥
नर नारी मिलके आनन्द मनाया भारी ॥श्री ज्ञान० ॥५॥

---

१ मूल सूत्रों की संक्षिप्त भाषा. २ फलोधी.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सूत्र भगवती व्याख्यान द्वारा फरमावे ।
विस्तारपूर्वक अर्थ खूब समझावे ।
तपस्याकी लगी है झड़ी अच्छा रंग वर्षे ।
पौषध पंचरंगी कर कर श्रावक हर्षे ।
शासन पर पूरा प्रेम उन्नति भारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ ६ ॥
दोनों पर्युषण हिल मिल के सहु कीना ।
हुवा धर्म तणा उद्योत लाभ बहु लीना ॥
रुपैये दो हजार ज्ञानमें आये ।
चौतीस हजार मिल पुस्तकें खूब छपाये ॥
सार्थ कीना नाम जाउँ बलिहारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ ७ ॥
कर्म उदित अन्तराय हमारे आई ।
नैत्रोंकी पीडा आप बहु थी पाइ ;
वैद्योंसे था ईलाज बहुत करवाया ॥
श्रावक लोगोंने भक्ति फर्ज बजाया ।
दुष्ट कर्म गये दूर दशा शुभ कारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ ८ ॥
पूरण भगवती वांची मुनिवर भारी ।
सोना रूपा से पूजे नर अरु नारी ॥
वरचोढ़ा से आगम शिखर चढायो ।
स्व–परमत जन जै जैकार मनायो ॥
मधुर देशना वर्षे अमृत धारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ ९ ॥
कारण आपके संघ आग्रह बहु कीनो ।
साल इठन्तर चौमासे यश लीनो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्तराध्ययनजी सूत्र व्याख्यान में वांचे ।
वर्षे वैराग को रंग श्रोता मन राचे ॥
अर्क तेजको देख उलुक धुंधकारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ १० ॥

जो धर्म द्वेषि अरु मद छकिया थे पूरा ।
जिन वाणीका खड्ग किया चकचूरा ॥
धर्म चक्र तप करके कर्म शिर छेदे ।
पंचरंगी है तप पूर क्रूरको भेदे ।
स्वामिवात्सल्य पांच हुए सुखकारी ॥ श्री ज्ञान० ॥११॥

पौषध का झंड़ा ध्वजा सहित फहराये ।
वादी मानी यह देख बहुत शरमाये ॥
पर्यूषणका था ठाठ मचा अति भारी ।
आए ज्ञान खाते में रुपये दोय हज़ारी ।
तीस हज़ार मिल पुस्तकें छपाई भारी ॥ श्री ज्ञान० ॥१२॥

स्वामिवात्सल्य दो खीचंद में कीना ।
यात्रा पूजाका लाभ भव्य जन लीना ।
ज्ञान ध्यान कर सूत्र खूब सुनाये ।
सेंतीस (३७) आगम सुनके आनंद पाये ।
किया सुन्दर उपकार आप तपधारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ १३ ॥

कई मत्तांध मिल के विघ्न धर्ममें करते ।
पत्थर फेंक आकाश नीचे शिर धरते ।
आग्रहसे विनती करते हैं नरनारी ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तब लाभालाभका कारण आप विचारी ।
द्रव्य क्षेत्रके ज्ञाता आप विचक्षण भारी ॥ श्री ज्ञान० ॥१४॥
बांचे है आगमसार आनन्द अति आवे ।
संघ चतुर्विध का सुन कर मन ललचावे ।
अठ्ठाई महोत्सव पूजा खूब भणीजे ।
श्री चिंतामणि प्रभु पास शान्ति सुख दीजे ।
अंग्रेजी बाजे साथ प्रभु असवारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ १५ ॥
जैसलमेरके संघमें विघ्न करता ।
जब लग उनके घरमें कहना चलता ।
करी विनती भये मुनि अनुरागी ।
लगा खूब उपदेश विघ्न गये भागी ।
संघका बनिया ठाठ अतिशय धारी ॥ श्री ज्ञान० ॥१६॥
श्री चिंतामणि पास लोदरवे पाया ।
संघ यात्रा कर आनन्द खूब मनाया ।
पूजा प्रभावना स्वामीवात्सल्य कीना ।
धन्य धन्य संघ पत्नि लाभ बहुतसा लीना ।
नगर प्रवेशके महोत्सवकी बलिहारी ॥ श्री ज्ञान० ॥१७॥
नरनारी मिल है अर्जी आन गुजारी ।
शरीर कारणसे विनती आप स्वीकारी ।
साल गुणियासी चौमासो दियो ठाई ।
व्याख्यानमें बांचे सूत्र भगवती माई ।
यौं बढ़ता रहा उत्साह धर्म हितकारी ॥ श्री ज्ञान० ॥१८॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिलके श्रावक सलाह खूब विचारी ।
करलें महोत्सव समवसरणकी तैयारी ।
जसवन्त सरायमें सुर मंडप रचवाये ।
थे हंडा झूमर और झाड़ लटकाये ।
शोभा सुन्दर अमरपुरी अनुहारी ॥ श्री ज्ञान० ॥१९॥
तीन गढकी रचना खूब बनाई ।
जिसके ऊपर था समवसरण दीया ठाइ ।
चौमुखजी थे महाराज जाऊँ बलिहारी ।
मूलनायकजी श्री शांतिनाथ सुखकारी ।
दर्शन कर कर हरषे सहु नर नारी ॥ श्री ज्ञान० ॥२०॥
है बड़ा मास भादवका महीना भारी ।
वद तीजसे हुवा महोत्सव जारी ।
पेटी तबला अरु ढोलक झंझा बाजे ।
गवैयोंकी ध्वनि गगनमें गाजे ।
संघ चतुर्विध है द्रव्य भाव पूजारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ २१ ॥
पूजाका बनिया ठाठ अजब रंग बर्षे ।
स्व पर मत जन देखी मनमें हर्षे ।
प्रभु भक्तिसे वे जन्म सफल कर लेवे ।
उदार चित्तसे प्रभावना नित्य देवे ।
गाजा बाजा गहगहाट नौबत घुरे न्यारी ॥ श्री ज्ञान०॥२२॥
अष्ट द्रव्यसे थाल भरी भरी लावे ।
पूजा सामग्री देख मन हुलसावे ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समकितकी निर्मल ज्योति जगमग लागी।
नहीं चले कर्मोंका जौर जाय सब भागी।
नव दिन नव रंगा ठाठ पूजा सुखकारी॥ श्री ज्ञान०॥२३॥

वद दशम को स्वामिवात्सल्य भारी।
अच्छी बनी है नुकतीपाककी तैयारी।
स्वधर्मी मिलके भोजन कर यश लीनो।
पर्यूषणों को उत्तर पारणो कीनो।
बने पर्यूषणोंका उत्सवके अधिकारी॥ श्री ज्ञान०॥२४॥

पौषध प्रतिक्रमणसे तप अठ्ठाई होवे।
पूर्व ले भवके कर्म मैल सब धोवे।
जन्म महोत्सव करके आनन्द पाया।
साढे आठसौ रुपया ज्ञानमें आया।
अब वरघोडेंका हाल सुनो चित्तधारी॥ श्री ज्ञान०॥२५॥

घुरे नगारा घोर कुमति गई भागी।
निशान ध्वजाकी लहर गगन जा लागी।
प्रभुकी असवारी सिरे बजारों आवे।
मिल नरनारीका वृन्द भक्ति गुन गावे।
पी–पी–ठंडाई मंडली न्यारी न्यारी॥ श्री ज्ञान०॥२६॥

मिलके प्रतिक्रमण संवत्सरिक ठाया।
लक्ष चौरासी जीवोंको खमवाया।
स्वामिवात्सल्य शुदि सातमकी तैयारी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नुकतिपाकादि भोजन विविध प्रकारी ।
पुन्य पवित्र जीमे नर अरु नारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ २७ ॥
संघ चतुर्विध मिलके खीचंद जावे ।
पूजाका वर्षे रंग गवैया गावे ।
प्रभु यात्रा करतो आनन्द अधिको आवे ।
शासन उन्नति प्रभावना दे पावे ।
स्वामिवात्सल्य जीमे सदा सुखकारी ॥ श्री ज्ञान०॥ २८ ॥
धर्म उत्साही वीर पुरुष कहवावे ।
जो उठावे काम विजय वह पावे ।
जैनधर्मका डंका जोर सवाया ।
विघ्नसंतोषी देख देख शरमाया ।
जयवन्त सदा जिन शासन है जयकारी ॥ श्री ज्ञान०॥२९॥
कृपा करके तीन चौमासा कीना ।
ज्ञान ध्यानका लाभ बहुत जन लीना ।
गुणी जनोंका गुण भव्य जन गावे ।
शुभ भावोंसे गोत्र तीर्थंकर पावे ।
बनि रहै शुभ दृष्टि सुनो उपकारी । श्री ज्ञान० ॥ ३० ॥
संवत् उगणीसे गुणियासी सुखकारी ।
कातिक शुद पंचमी बुधवार है भारी ।
कवि कुशल इम जोड़ लावणी गावे ।
फलोधीमें सुन श्रोता सब हरषावे ।
चरणोंमें वन्दना होजो वारम्वारी ॥ श्री ज्ञान० ॥ ३१ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दोहा—जयवन्ता जिन शासने, विचरो गुरु उजमाल ।
देश पधारो हमतणे, कर जोड़ी कहे कुशाल ॥
" तीन चतुर्मास के दिग्दर्शनसे "

विक्रम संवत् १९८० का चतुर्मास (लोहावट)

आपश्री का सत्रहवाँ चतुर्मास इस वर्ष लोहावट ग्राम में हुआ। व्याख्यान में आप उसी रोचकता से भगवतीजी सूत्र फरमाते थे। श्रोताओं को आप का व्याख्यान बहुत कर्णप्रिय लगता था। सूत्रजी की पूजा अर्थात् ज्ञानखाते में १८॥ मुहर तथा ५५०) रुपये रोकड़े सब मिलाकर १०००) रुपये से पूजा हुई थी। वरघोड़ा बड़े ही समारोह से चढाया गया था। इसमें फलोधी के लोगोंने भी अच्छा भाग लिया था.

आपने इस चतुर्मास में दो संस्थाएँ स्थापित कीं। एक तो जैन नवयुवक मित्र मण्डल तथा दूसरी श्री सुखसागर ज्ञान प्रचारक सभा। वर्तमान युग सभा का युग है। जिस जाति या समाज के व्यक्तियों का संगठन नहीं है वे संसार की उन्नति की सरपट दौड़ में सदा से पीछी रही हैं। अतएव जैन समाज में ऐसी अनेक संस्थाओं की नितान्त आवश्यक्ता है जिनमें युवक और बालक ग्रथित होकर समाज सुधार के पुनीत कार्य में कमर कस कर लग्गा लगा दें।

आप साथ ही साथ श्रावकों को धार्मिक ज्ञान भी सिखाया करते थे। आप के सदुपदेश से, भद्दे ढंग से होनेवाले हास्यास्पद

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जीमनवारों में भी आवश्यक परिवर्तन हुए । जब से हमारे मुनिराजों का ध्यान समाज की पुरानी हानिप्रद रुढियों को तुड-वाने की ओर गया है हमारे समाज में जागृति के चिह्न प्रकट हो रहे हैं । प्रत्येक स्थानपर कुछ न कुछ आन्दोलन इसी प्रकार के प्रारम्भ हुए हैं । लोहावट नगरमें इस कार्य की नींव सर्व प्रथम आपहीने डाली । जिसे समाज के हजारों रूपये प्रतिवर्ष व्यर्थ खर्च हो रहा थे वह रुक गये ।

इस वर्ष ये पुस्तकें प्रकाशित हुई ।

५००० द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका ।
१००० शीघ्रबोध भाग १ दूसरीवार ।
१००० ,, ,, २ ,,
१००० ,, ,, ३ ,,
१००० ,, ,, ४ ,,
१००० ,, ,, ५ ,,
१००० गुणानुराग कुलक हिन्दी भाषान्तर
५००० पंच प्रतिक्रमण विधिसहित ।
१००० महासती सुर सुन्दरी । (कथा)
१००० मुनि नाममाला । (कविता)
१००० स्तवन संग्रह भाग ४ था ।
१००० विवाह चूलिका की समालोचना ।
१००० छ कर्म ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद ।

२१००० सब प्रतिएँ ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस चौमासे में श्री संघ की ओर से करीबन् रु. ९०००) सुकृत कार्य में व्यय हुए।

गुरु गुण वर्णन।

गुरु ' ज्ञान ' नगीना। आछो दीपायो मार्ग जैन को।
शहर फलोधी से आप पधारे। लोहाणा नगर मझार॥
श्री संघ मिल महोत्सव कीनो। वरत्या जै जै कार हो॥गु०॥१॥
चिरकाल से थी अभिलाषा। पूरण की गुरु आज॥
सूत्र भगवती वचे व्याख्यानमें। सुण हर्षे सकल समाज हो॥गु०॥२॥
जैन नवयुवक मित्र मण्डल अरु। सुखसागर ज्ञान प्रचार॥
संस्था स्थापि किया सुधारा। हुआ बहुत उपकार हो॥गु०॥३॥
बीसहजार पुस्तकें छपाई। किया ज्ञान परचार॥
न्याति जाति कई सुधारा। कहते न आवे पार हो॥गु०॥४॥
ज्ञानप्रचार समाज सुधारण। कमर कसी गुरुराज॥
यथा नाम तथा गुण आप के। गुणगावे 'युवक' समाज हो॥गु०॥५॥

लोहावट से विहार कर आपश्री पली पधारे। लोहावट श्री संघ तथा मण्डलके सभासद यहाँ तक साथ थे। पली में श्रीमान् छोगमलजी कोचरने स्वामीवात्सल्य भी किया था। भंडारी चन्दनचन्द्रजी तथा वैद्य मुहता वदनमलजी के साथ आप खींवसर होकर नागोर पधारे।

विक्रम संवत् १९८१ का चातुर्मास (नागोर)।

आपश्री का अठारहवाँ चातुर्मास नागोर में हुआ। आप व्या-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ख्यान में श्री भगवतीजी सूत्र सुनाते थे। जिसका महोत्सव वरघोड़ा पूजा बड़े ही समारोह से हुआ। आपके व्याख्यान में श्रोताओं की सदा भीड़ लगी रहती थी। आपके उपदेशके फलस्वरूप यहाँ तीन महत्वपूर्ण कार्यारम्भ हुए। एक तो श्री वीर मण्डल की स्थापना हुई तथा श्रावकोंने उत्साहित होकर बड़े परिश्रम से समवरणकी दिव्य रचना करवाई। इस अवसर पर अठाई महोत्सव तथा शान्तिस्नात्र पूजा का कार्य देखते ही बनता था। तीसरा कार्य भी कम महत्व का नहीं था। आपके उपदेश से मन्दिरजी के ऊपर शिखर बनवाने का कार्य श्रावकों से प्रारम्भ करवाया गया था। इस चातुर्मासमें श्री संघकी ओर से करीबन रु. १७०००) शुभ कार्यों में व्यय किये गये थे।

निम्न लिखित पुस्तकें भी प्रकाशित हुई—

१०००	शीघ्रबोध	भाग	६	दूसरी	वार।
१०००	,,	,,	७	,,	,, ।
१०००	,,	,,	८	,,	,, ।
१०००	,,	,,	९	,,	,, ।
१०००	,,	,,	१०	,,	,, ।
५०००	कुल पाँच सहस्र प्रतिएँ। एक ही जिल्दमें				

आपने एक निबन्ध लिख कर लोढा उमरावमलजी द्वारा फलोधी पार्श्वनाथ स्वामी के मेले पर एकत्रित हुए श्री संघ के पास भेजा। जिसका तत्काल प्रभाव पड़ा। उसी लेख के फलस्वरूप

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

" श्री मारवाड़ तीर्थ प्रबंधकारिणी कमेटी " स्थापित हुई। जिसकी देखरेख में मारवाड के ७८ मन्दिरों का निरीक्षण हुआ तथा तत्सम्बन्धी रिपोर्ट आदि भी तैयार हुई। किन्तु कार्य कर्त्ताओं के अभाव से कार्य रुक गया अन्यथा आज मारवाड़ के तीर्थोंकी सोचनीय दशा कदापि दृष्टिगोचर नहीं होती।

इस वर्ष आपने अठुम ३ छठ्ठ ७ तथा फुटकल तपस्या भी की थी।

इस चातुर्मासका वर्णन करता हुआ महात्मा लालचन्दने एक कविता बनाइ थी वह—

वन्दो ज्ञानसुन्दर महाराज। समौसरण रचाने वाले। टेर।
नगर नगीना भारी। हैं शहर बड़ा गुलजारी।
जैन मन्दिरोंकी छबी न्यारी। भवोदधि पार लगानेवाले। वं. ।१।
गुरु ज्ञानसुन्दर उपकारी। कई तार दिये नर नारी।
शुभ भाग्य दशा हमारी। धर्मकी नाव तिरानेवाले ।वं.। २।
साल इक्यासी है खासा। हुआ नगीने शहर चौमासा।
सफल हुई संघ की आशा। धर्मका झंडा फहरानेवाले। वं.। ३।
सूत्र भगवतीजी फरमावे। श्रोता सुण के आनन्द पावे।
ये तो जन्म सफल बनावे। अमृत रस वरसानेवाले ।वं.। ४।
पूजा प्रभावना हुई भारी। तप तपस्या की बलिहारी।
स्वामिवात्सल्य है सुखकारी। धर्मोन्नति करानेवाले ।वं.। ५।
मन्दिर चौसटजी का भारी। बनी है समवसरण की तय्यारी।
हांडी कांच झूमर है न्यारी। स्वर्ग से वाद वदाने वाले। वं. ।६।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मण्डप फुलवाड़ीसे छाया । छवि कों देख मन ललचाया ।
प्रदिक्षणा दे दे आनन्द पाया । भवकी फेरी मिटानेवाले । वं. ।७।
मूल नायक भगवान् । विराजे शांति सुधारस पान ।
पूजा गावे मिलावे तान । भवजल पार लगानेवाले । वं. । ८ ।
नित्य नई अंगी रचावे । दर्शन कर पाप हटावे ।
नरनारी मिल गुण गावे । समकित गुण प्रगटानेवाले । वं. । ९ ।
स्व परमत जन बहु आवे । दुनियाँ मन्दिर में न समावे ।
नौबत वाजा धूम मचावे । कर्मों को मार लगानेवाले । वं. । १० ।
संघमें हो रहा जय जयकार । गुणोंसे गगन करे गुंजार ।
यात्रि आवे लोग अपार । महात्मा " लाल " कहानेवाले । वं. ।११।

चातुर्मास के पश्चात् विहार कर आप मूँडवा हो कर कुचेरे पधारे । वहाँपर न्याति सम्बन्धी जीमनवारों में एक दिन पहले भोजन तैयार कर लिया जाता था तथा दूसरे दिन बासी भोजन काम में लाया जाता था । यह रिवाज आपने दूर करवाया । पाठशाला के विषय में भी खासी चर्चा चली थी । खजवाने जब आप पधारे तो उपदेश के फलस्वरूप जैन ज्ञानोदय पाठशाला तथा जैन मित्र मण्डल की स्थापना हुई । वहाँ से आप रूण पधारे । यहाँ श्री ज्ञान प्रकाशक मण्डल की स्थापना हुई । वहाँ से जब आप फलोधी तीर्थपर यात्रार्थ पधारे तो मारवाड़ तीर्थ प्रबन्धकारिणी कमेटी की बैठक हुई थी और उस कार्य में ठीक सफलता भी मिली थी ।

जब आप कुचेरे के श्रावकों के आग्रह करने पर वहाँ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पधारे थे तो श्री ज्ञानवृद्धि जैन पाठशाला तथा श्रीमहावीर मण्डल की स्थापना हुई थी। पुनः खजवाने, रूण और फलोधी होते हुए मेड़ते में श्रीमान स्व. बहादुरमलजी गधैया के अनुरोध से आपने वहाँ सार्वजनिक लेकचर दिया था, जो सारगर्भित तथा सामयिक था। पुनः आप फलोधी पधारे।

विक्रम संवत् १९८२ का चातुर्मास (फलोधी)।

आपश्री का उन्नीसवाँ चातुर्मास मेड़ता रोड फलोधी तीर्थपर हुआ। इस वर्ष से चरित नायक का ध्यान इतिहास की ओर विशेष आकर्षित हुआ। आप का विचार " जैन जाति महोदय " नामक बड़े ग्रंथ को ग्रथित करने का हुआ। अतएव आपने इसी वर्ष से सामग्री जुटाने के लिये विशेष प्रयत्न प्रारम्भ करदिया। इसी दिनसे प्रतिदिन आपश्री ऐतिहासिक अनुसन्धान में व्यस्त रहते हैं। आपने खजवाना, नागोर, बीकानेर और फलोधी के प्राचीन ज्ञान भंडारों कि सामग्री को देखा। जो जो सामग्री आप को दृष्टिगोचर हुई आपने नोट करली। वही सामग्री सिलसिलेवार जैन जाति महोदय प्रथम खण्ड के रूप में पाठकों के सामने रखी गई है। महाराजश्रीने ऐतिहासिक खोज प्रारम्भ कर के हमारी समाजपर असीम उपकार किया है।

इस वर्ष निम्नलिखित साहित्य प्रकाशित हुआ—

१००० दानवीर भगडूशाहा (कवित्त)।
१००० शुभ मुहूर्त शकुनावली।
१००० नौपद अनुपूर्वी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१००० नित्य स्मरण पाठमाला ।
१००० भाषण संग्रह प्रथम भाग ।
१००० भाषण संग्रह दूसरा भाग ।
१००० स्तवन संग्रह चौथा भाग । दूसरीवार ।

७००० कुल सात हजार प्रतिऐं ।

स्थानकवासी साधु मोतीलालजी को जैन दीक्षा देकर उनका नाम मोतीसुन्दर रक्खा गया था । पर्यूषण पर्व में यहाँ नागोर, खजवाना, रूण और कुचेरे आदि के कई श्रावक आए थे । आठ दिन पूजा प्रभावना स्वामीवात्सल्य आदि धार्मिक कृत्यों का सिल-सिला ज़ारी रहा । उस समय की आमदनी से आपश्री के चातुर्मास के स्मरणार्थ चांदी का कलश श्री भण्डार में अर्पण किया गया था ।

फलोधी से विहारकर आप रूण, खजवाना, मेड़ता फलोधी, पीसागन पधारे वहाँ बहुत से भव्यों को वासक्षेपपूर्वक समकितादि की प्राप्ति कराई तथा श्री रत्नोदय ज्ञान पुस्तकालय की स्थापना करवाई वहाँ से आप श्री अजमेर पधारे । रास्ते में अनेक श्रावकों की श्रद्धा सुधारकर उन्हें मूर्त्तिपूजक बनाया । ऐतिहासिक खोज के सम्बन्ध में आपश्री राय बहादुर पं. गौरीशंकरजी ओझा से मिले । आवश्यक वार्तालाप बहुत समय तक हुई । फिर जेठाणा की ओर विहारकर कई श्रावकों को आपने मूर्त्तिपूजक बनाया । पुनः पीसांगन, गोविन्दगढ, कुडकी होकर कैकीन पधारे । वहाँ उपदेश दे आपश्रीने देवद्रव्य की ठीक व्यवस्था कर-वाई । फिर आपश्री कालू, बलून्दा, जेतारण, खारीया, हो बीलाडे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पधारे। यहाँ अठाई महोत्सव तथा खारीया में वरघोड़ा आदि का अपूर्व ठाठ हुआ। कई श्रावक संवेगी हुए। बीलाड़ा में स्थानकवासियों को प्रश्नोत्तर में पराजित करते हुए सिंघवीजी नथमलजी को मूर्त्तिपूजक श्रावक बनाया। बाद कापरडा की यात्रा का लाभ लेकर आप श्री पीपाड़ पधारे।

विक्रम संवत् १९८३ का चातुर्मास (पीपाड़)।

चरित्रनायकजी का बीसवाँ चातुर्मास पीपाड़ में बड़े समारोह सहित हुआ। व्याख्यान में आप पूजा प्रभावना वरघोड़ादि महा-महोत्सवपूर्वक श्री भगवतीजी सूत्र इस ढंग से सुनाते थे कि सर्व परिषद् आनन्दमग्न हो जाती थी। श्रोताओं के मनपर व्याख्यान का पूरा प्रभाव पड़ता था क्योंकि आप की विवेचन शक्ति बढ़ी चढ़ी है। उन की सदा यही अभिलाषा बनी रहती थी कि आपश्री अविछिन्न रुप से धारा प्रवाह प्रभु देशना का अमृत आस्वादित करते रहें। वक्तृत्व कला में आप परम प्रवीण एवं दक्ष हैं। आप की चमत्कारपूर्ण वाग्धाराऐं श्रोता को आश्चर्यचकित कर देती है।

इस वर्ष में आपने तेला १ तथा छठ ३ के अतिरिक्त कई उपवास किये थे। आप के उपदेश के फलस्वरूप पीपाड में तीन संस्थाऐं स्थापित हुई (१) जैन मित्र मण्डल। (२) ज्ञानोदय लाइब्रेरी तथा (३) जैन श्वेताम्बर सभा। इन तीनों को स्थापित कराकर आपने स्थानीय जैन समाज के शरीर में संजीवनी शक्ति फूंक दी। इन तीनों सभाओं द्वारा जनता में अच्छी जागृति दृष्टिगोचर होती थी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ऐसा कोई वर्ष नहीं बीतता कि आपश्री की बनाई हुई कुछ पुस्तकें प्रकाशित नहीं होती हों। ऐसा क्यों न हो ! जब कि आपश्री की उत्कट अभिरुचि साहित्य प्रचार की ओर है। इस वर्ष ये पुस्तकें प्रकाशित हुई :—

१००० जैन जाति निर्णय प्रथमाङ्क द्वितीयाङ्क।
१००० पञ्च प्रतिक्रमण सूत्र ।
१००० स्तवन संग्रह चतुर्थ भाग—तृतीय वार ।
३००० तीन सहस्र प्रतिऐं।

पीपाड से विहारकर आप कापरडाजी की यात्रा कर बीसलपुर पधारे। यहाँ पर आप के उपदेश से जैन श्वेताम्बर पुस्तकालय की स्थापना हुई। शान्तिस्नात्र पूजापूर्वक मन्दिरजी की आशातना मीटाइ गइ थी। फिर आप पालासनी, कापरडा और बीलाडा पधारे यहाँपर चैत्र कृष्णा ३ को स्थानक० साधु गम्भीरमलजी को जैन दीक्षा दे उनका नाम गुणसुन्दरजी रक्खा; वहाँ से पिपाड़ पधारे। यहाँ ओलियों का अठ्ठाइ महोत्सव बड़ ही धामधूम से हुआ। तत्पश्चात् आप प्रतिष्ठा के सुअवसर पर वगड़ी पधारे बाद सीयाट सोजत खारिया होते हुए बीलाड़े पधारे।

विक्रम संवत् १९८४ का चातुर्मास (बीलाड़ा)।

आपश्री का इक्कीसवाँ चातुर्मास बीलाड़े हुआ। बीलाड़े के श्रावकों की अभिलाषा कई मुद्दतों बाद अब पूर्ण हुई। उन्हें आप जेसे तत्ववेत्ता, प्रगाढ पण्डित एवं ऐतिहासिक अनुसन्धान, व उपदेशक उपलब्ध हुआ यह उन के लिये परम अहोभाग्य की

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बात थी। व्याख्यान में आप पूजा प्रभावना वरघोड़ादि महा-महोत्सवपूर्वक सूत्रश्री भगवतीजी सुनाते थे। प्रत्येक श्रोता संतोषित था आप की मधुर वाणीने सब के हृदय में सहज ही स्थान पालिया था। व्याख्यान परिषद में पूरा जमघट होता था। आप दृष्टांत तथा Reference प्रमाण आदि की प्रणाली से उपदेश दे कर जन मन को मोह लेते थे। व्याख्यान का प्रभाव भी कुछ कम नहीं पड़ता था। जैनेत्तर लोगोंपर भी काफी प्रभाव पड़ता था।

ज्ञानाभ्यास, ऐतिहासिक खोज, पुस्तकों के सम्पादन तथा लेखन के अतिरिक्त आपने अठ्ठम १, छट्ठ २ तथा कई उपवास भी इस चातुर्मास में किये। साथ साथ ग्रंथ प्रकाशन का कार्य भी जारी था। इस वर्ष निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई।

१००० धर्मवीर जिनदत्त सेठ।
१००० मुखवस्त्रिका निर्णय निरीक्षण।
१००० प्राचीन छन्दावली भाग प्रथम।

३००० कुल तीन सहस्र पुस्तकें।

बीलाड़ा से विहार कर आप खारीया, कालोना, बीलावस पाली, गुंदोज, बरकाणा पधार कर विद्याप्रेमी आचार्य श्रीविजय-वल्लभसूरिजी के दर्शन और तीर्थयात्रा की बाद रानी स्टेशन, नाडोल, नारलाई, देसूरी, घाणेराव, सादड़ी, राणकपुर और भानपुरा होते हुए आप श्री उदयपुर पधारे। वहाँ आप का स्वागत बड़े समारोह के साथ हुआ। वहाँ की जनता में आप के तीन सार्वजनिक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

व्याख्यान हुए। उदयपुर से आपश्री केशरियानाथजी की यात्रार्थ पधारे। पुनः उदयपुर पधारने पर आपश्री के चार व्याख्यान हुए। उदयपुर श्रीसंघ की इच्छा थी कि आप चातुर्मास वहाँ करें पर मुनि गुणसुन्दरजी की अस्वस्थता के कारण आप वहाँ अधिक नहीं ठहर सके। अतः वापस सायरा पधारे आप के वहाँ जाहिर व्याख्यान हुए और वहाँ जैन लायब्रेरी की स्थापना भी हुई। वहाँ से भानपुरा हो सादड़ी, मुंडारे, लाठाडे, लुनावा, सेवाडी, और हो बीजापुर वीसलपुर पधारे। वहाँ अठाई महोत्सव शांतिस्नात्र तथा दो मूर्त्तियों की प्रतिष्ठा हुई। स्थाननकवासि जीवनलाल को जैन दीक्षा दे उन का नाम आपने जिनसुन्दर रक्खा। फिर शिवगंज, सुमेरपुर, पेरवा, और बाली हो आप सादड़ी पधारे।

विक्रम संवत् १९८५ का चातुर्मास (सादड़ी मारवाड़)।

आपश्री का बाईसवाँ चातुर्मास बड़े समारोह से सादड़ी मारवाड़ में हुआ। व्याख्यान में आप पूजा प्रभावना वरघोड़ा आदि बड़े ही महोत्सव के साथ प्रारंभ किया हुवा श्री भगवतीजी सूत्र ऐसी मनोहर भाषा में फरमाते थे कि व्याख्यान भवन में श्रोताओं का समाना कठिन होता था। ऐसे भीड़ भरे भवन में भगवतीजी के उपदेश से जिन कई भव्य जीवोंने लाभ लिया था वे वास्तव में बड़े भाग्यशाली थे। आपकी देशना सुनने से मिथ्यात्वियाँ के मन के संदेह सदा के लिये दूर हो जाते हैं। आप के प्रखर प्रताप तथा विद्वता के आगे मिथ्यात्वी हार मानते हैं। इस वर्ष आपने तपस्या में छट्ठ १ तथा कुछ फुटकल उपवास किये थे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनिश्री का प्रयत्न सदा पुस्तकें लिखने का रहता है और इस प्रकार साहित्य को सुलभ और सुगम करने का श्रेय जो आप-श्रीको प्राप्त हुआ है वह ध्यान देने योग्य है। इस के लिये हमारा जैन समाज विशेष कर मारवाड़ी समाज मुनिश्री का चिरऋणी रहेगा। इस वर्ष निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई।

१००० एक प्रसिद्धवक्ता की तस्करवृत्ति का नमूना।
१००० गोडवाड़ के मूर्त्तिपूजक और सादड़ी के लुंकों का ३५० वर्षका इतिहास।
१००० ओसवाल जाति समय निर्णय।
१००० जैन जातियाँ का सचित्र इतिहास।
२००० शुभ मुहूर्त तथा पञ्चों की पूजा। दूसरीवार
१००० निराकार निरीक्षण।
१००० प्राचीन छन्द गुणावली भाग द्वितीय।

श्री संघ में एक साधारण बात पर तनाज़ा हो गया था जो रु ५०१) देवद्रव्य के विषय में था पर आपने ऐसा इन्साफ दिया कि दोनों पक्ष में शान्ति स्थापन हो गई तथा "जैन जाति महोदय" नामक ग्रंथ के प्रकाशन के लिये श्रावकों की ओर से लगभग ३६००) के चन्दा हुआ।

सादड़ी से विहार कर धाणेराव, देसूरी, नाडलाई, नाडोल बरकाणा, रानी स्टेशन, धणी और खुडाला हो आपश्री बाली पधारे यहाँ से—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१००० ओसवालों का पद्यमय इतिहास ।

१००० समवसरण प्रकरण । कूल २००० प्रतिए

प्रकाशित हुई तथा श्रावकोंने उत्साह से समवसरण की रचना में करीबन् पाँच सहस्र रुपये खर्च किये । पुनः आपश्री रानी स्टेशन वरकाणा और बाली होकर लुनावे पधारे ।

विक्रम संवत् १९८६ का चातुर्मास (लुनावा) ।

आप श्री का तेईसवाँ चातुर्मास लुनावा में है। आपश्री की वाणी द्वारा पीयूष वर्षा बड़े आनन्द से बरस रही है । वाक् सुधा का निर्मल श्रोत प्रवाहित होता हुआ श्रोताओं के संदिग्ध को दूर भगा रहा है । आपश्री व्याख्यान में श्री भगवतीजी सूत्र इस ढंग से सुनाते हैं कि व्याख्यान श्रवण के हित जनता ठठ्ठ लगजाता है । यह अनुपम दृश्य देखे ही बन आता है । श्री भगवतीजी की पूजा में ज्ञान खाते में रु. ८९०) आठ सौ पचास रुपये एकत्रित हुए हैं । श्रावकों के मन में खूब धार्मिक प्रेम है । वे धार्मिक कृत्यों में ही अपना अधिकांश समय बिताते हैं ।

जिस ऐतिहासिक खोज के आधार पर आप पिछले कई वर्षों से ' जैन जाति महोदय ' ग्रंथकी रचना कर रहे थे उसका प्रथम खण्ड इसी वर्ष पूरा हुआ है । सब मिलाकर इस बार ये पुस्तकें प्रकाशित हुई ।

१००० प्राचीन गुण छन्दावली भाग तीसरा ।

१००० ,, ,, ,, भाग चौथा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२०००	दो विद्यार्थियों का संवाद।
१०००	स्त्रियों की स्वतंत्रता या अर्द्ध भारत (Half India)।
१०००	नयचक्रसार हिन्दी अनुवाद।
१०००	बाली के फैसले।
१०००	जैनजाति महोदय प्रकरण १ ला।
१०००	,, ,, २ रा।
१०००	,, ,, ३ रा।
१०००	,, ,, ४ था।
१०००	,, ,, ५ वाँ।
१०००	,, ,, ६ ठा।
१०००	स्तवन संग्रह भाग ५ वाँ।
१३०००	तेरह सहस्र प्रतिएँ।

आपश्रीके उपदेश से यहाँ एक कन्यापाठशाला स्थापित हुई है जिस में कई कन्याएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। श्री शान्तिप्रचार मण्डल का भी पुनरूद्धार हुआ इस प्रकार की संस्था की इस गाँव में नितान्त आवश्यक्ता थी सो आपश्री ही के प्रयत्न से पूरी हुई है। पुस्तक प्रचार फण्ड में रू. २०००) की श्री संघकी ओर से सहायता मिली—

हमारी आशाएँ।

पाठकोंने उपरोक्त अध्यायों को पढ़कर जान लिया होगा कि मुनि महाराज श्री ज्ञानसुन्दरजी कितने परिश्रमी तथा ज्ञानी हैं। यद्यपि आपश्री के गुणों का विस्तृत दिग्दर्शन कराना इस प्रकार के संक्षिप्त

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

परिचय में असम्भव है तथापि आशा है पाठक अभी इतने में ही संतोष करलेंगे। यदि अवसर हुआ तो विस्तृत रूप में आपके जीवन की घटनाएँ आपके सम्मुख रखने का दूसरा प्रयत्न किया जायगा।

उपरोक्त ग्रंथों को अनवरत परिश्रम से तैयार कर हमारे सामने रखने का जो कार्य आपश्रीने किया है वह वास्तव में असाधारण है। इस के लिये हम ही क्या सारा जैन समाज आपका चिरऋणी रहेगा।

हम को आपश्री से बड़ी बड़ी आशाएँ हैं। अन्त में हम यह चाहते हैं कि आपकी असीम शक्ति से हमें जैन समाज की उन्नति करने में बहुत सहायता मिले। हमारे दुर्बल हृदय आप से निस्वार्थ और निरपेक्ष हो जावें। आपश्री इसी प्रकार हमारे सामने ज्ञान प्राप्त करने के साधन जुटाते रहें ताकि हम अपने आपको यथार्थ पहिचान ले तथा तदनुसार कार्य करें।

हमें आप से सदा ऐसा उपदेश मिलता रहे कि हम अपना पराया भूल कर निरंतर विश्व सेवा में निमग्न रहें। आप दीर्घायु हों ताकि अनेक भव्य प्राणी अपनी वासना की अजेय दुर्गमाला का आपके उपदेश से क्षणभर में ध्वस्त कर डालें।

हमें गौरव है कि ऐसे महा पुरुष का जन्म हमारे मरुधर प्रान्त में हुआ है—हमारी हार्दिक अभ्यर्थना है कि सदा इसी प्रकार आप द्वारा हमारे समाज की निरन्तर भलाई होती रहे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हम भूले भटके अशिक्षित ज्ञान में पिछड़े हुए मरुधरवासियों के लिये आप ही पथ प्रदर्शक एवं हमारे सर्वस्व प्रदीपगृह हैं।

हमारे क्षणभङ्गुर जीवन के प्रत्येकांश में आपश्री का मुक्त मुख परमानन्द दायक दिव्य सन्देश सुनाता रहे।

राजस्थान सुंदर साहित्य सदन—
जोधपुर।

भवदीय चरणाकिङ्कर—
श्रीनाथ मोदी जैन, निरीक्षक टीचर्स ट्रेनिङ्ग स्कूल—जोधपुर।

" Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime;
And, departing, leave behind us
Footprints on the sands of time. "

LONG FELLOW—

" जीवन चरित महा-पुरुषों के, हमें शिक्षणा देते हैं।
हम भी अपना अपना जीवन, स्वच्छ रम्य कर सकते हैं॥ "
" हमें चाहिये हम भी अपने, बना जायँ पद-चिह्न ललाम।
इस भूमी की रेती पर जो, व्यक्त पड़े आवें कुछ काम॥ "
" देख देख जिन को उत्साहित, हों पुनि वे मानव मतिधर।
जिन की नष्ट हुई हो नौका, चट्टानों से टकराकर॥ "
" लाख लाख संकट सहकर भी, फिर भी साहस बांधे वे।
जाकर मार्ग मार्ग पर अपना, 'गिरिधर' कारज साधें वे॥ "

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आपश्री की प्रकाशित पुस्तकोंकी सूची।

संख्या.	पुस्तक का नाम.	आवृत्ति	कुल संख्या.	मूल्य.
१	प्रतिमा छत्तीसी	६	२५०००	)॥
२	गयवर विलास	२	२०००	।)
३	दानछत्तीसी	४	८०००	)॥
४	अनुकम्पाछत्तीसी	४	८०००	)॥
५	प्रश्नमाला	३	३०००	~)
६	स्तवनसंग्रह भाग १ ला	५	५०००	≈)
७	पैंतीस बोलसंग्रह	१	१०००	~)
८	दादासाहिबकी पूजा	१	२०००	≈)
९	चर्चा का पब्लिक नोटिश	१	१०००	~)
१०	देवगुरुवन्दनमाला	२	६०००	~)
११	स्तवनसंग्रह भाग दूसरा	३	३०००	≈)
१२	लिंगनिर्णय बहत्तरी	३	३०००	~)
१३	स्तवनसंग्रह भाग ३ रा	३	३०००	≈)
१४	सिद्धप्रतिमा मुक्तावली	१	१०००	॥)
१५	बत्तीससूत्र दर्पण	१	५००	≈)
१६	जैन नियमावली	२	२०००	)॥
१७	चौरासी आशातना	२	२०००	)॥
१८	डंके पर चोट	१	५००	अमूल्य
१९	आगम निर्णय प्रथमांक	१	१०००	≈)
२०	चैत्यवन्दनादि	२	२०००	≈)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२१	जिनस्तुति	२	२०००	)॥
२२	सुबोधनियमावली	२	६०००	-)
२३	जैनदीक्षा	२	२०००	अमूल्य
२४	प्रभुपूजा	२	२०००	„
२५	व्याख्याविलास भाग १ ला	१	१०००	=)
२६	शीघ्रबोध भाग १ ला	२	२०००	।)
२७	शीघ्रबोध भाग २ रा	२	२०००	।)
२८	शीघ्रबोध भाग ३ रा	२	२०००	।)
२९	शीघ्रबोध भाग ४ था	२	२०००	।)
३०	शीघ्रबोध भाग ५ वां	२	२०००	।)
३१	सुखविपाक मूलसूत्र पाठ	१	५००	=)
३२	शीघ्रबोध भाग ६ ठा	२	२०००	।)
३३	शीघ्रबोध भाग ७ वां	२	२०००	।)
३४	दशवैकालिक मूल सूत्र	१	१०००	=)
३५	मेझरनामा	२	४५००	॥)
३६	तीन निर्नामक लेखों का उत्तर	२	२०००	अमूल्य
३७	ओशियों ज्ञानभंडार की लिस्ट	१	१०००	„
३८	शीघ्रबोध भाग ८ वां	२	२०००	॥)
३९	शीघ्रबोध भाग ९ वां	२	२०००	।)
४०	नन्दीसूत्र मूलपाठ	१	१०००	।)
४१	तीर्थयात्रास्तवन	२	२०००	अमूल्य
४२	शीघ्रबोध भाग १० वां	१	२०००	।)
४३	अमे साधु शा माटे थया !	१	१०००	अमूल्य
४४	विनती शतक	१	१०००	„

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

४५	द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका	१	५०००	≈)
४६	शीघ्रबोध भाग ११ वां	१	१०००	।)
४७	शीघ्रबोध भाग १२ वां	१	१०००	।)
४८	शीघ्रबोध भाग १३ वां	१	१०००	।)
४९	शीघ्रबोध भाग १४ वां	१	१०००	।)
५०	आनन्दघन चौवीसी	१	१०००	अमूल्य
५१	शीघ्रबोध भाग १५ वां	१	१०००	।)
५२	शीघ्रबोध भाग १६ वां	१	१०००	।)
५३	शीघ्रबोध भाग १७ वां	१	१०००	।)
५४	ककावत्तीसी सार्थ	१	१०००	।)
५५	व्याख्याविलास भाग २ रा	१	१०००	≈)
५६	व्याख्याविलास भाग ३ रा	१	१०००	≈)
५७	व्याख्याविलास भाग ४ था	१	१०००	≈)
५८	स्वाध्याय गुँहली संग्रह भाग १ ला	१	१०००	≈)
५९	राइदेवसि प्रतिक्रमण	१	१०००	≈)
६०	उपकेशगच्छ लघुपटावली	१	१०००	अमूल्य
६१	शीघ्रबोध भाग १८ वां	१	१०००	)
६२	शीघ्रबोध भाग १९ वां	१	१०००	)
६३	शीघ्रबोध भाग २० वां	१	१०००	)
६४	शीघ्रबोध भाग २१ वां	१	१०००	)
६५	वर्णमाला	२	१०००	)
६६	शीघ्रबोध भाग २२ वां	१	१०००	
६७	शीघ्रबोध भाग २३ वां	१	१०००	।)
६८	शीघ्रबोध भाग २४ वां	१	१०००	।)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

६९	शीघ्रबोध भाग २५ वां	१	१०००	।)
७०	तीनचतुर्मास का दिग्दर्शन	१	१०००	अमूल्य
७१	हितशिक्षाप्रश्नोत्तर	१	१०००	=)
७२	विवाहचूलिका की समालोचना	१	२०००	=)
७३	स्तवनसंग्रह भाग ४ था	१	१०००	-)
७४	सूचीपत्र	५	१३०००	अमूल्य
७५	महासती सुरसुन्दरी कथा	१	१०००	=)
७६	पंचप्रतिक्रमण विधिसहित	१	५०००	अमूल्य
७७	मुनि नाममाला स्तवन	१	१०००	=)
७८	छ कर्मग्रन्थ हिन्दी भाषान्तर	१	१०००	।)
७९	दानवीर झगडूशाहा	१	१०००	अमूल्य
८०	शुभमुहूर्त शकुनावली	२	३०००	=)
८१	जैन जातिनिर्णय प्रथमांक	१	१०००	।)
८२	जैन जातिनिर्णय द्वितीयांक	१	१०००	
८३	पंचप्रतिक्रमण मूलसूत्र	१	१०००	।)
८४	प्राचीन छन्द गुणावली भाग १ ला	१	१०००	=)
८५	धर्मवीर सेठ जिनदत्त की कथा	१	१०००	=)
८६	जैन जातियों का इतिहास सचित्र	१	१०००	।)
८७	ओसवाल जाति समय निर्णय	१	१०००	=)
८८	मुखवस्त्रिका-निरीक्षण	१	१०००	)॥
८९	निराकार निरीक्षण	१	१०००	अमूल्य
९०	दो विद्यार्थियों का संवाद	१	१०००	=)
९१	प्राचीन छन्द गुणावली भाग २ रा	१	१०००	=)
९२	एक प्रसिद्ध वक्ताकी तस्करवृत्ति	१	१०००	-)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

९३	धूर्तपंचो की क्रान्तिकारी पूजा	२	२०००	)॥
९४	ओसवाल जाति का पद्यमय इतिहास	१	१०००	-)
९५	नयचक्र सार हिन्दी भाषांतर	१	१०००	।=)
९६	स्त्री स्वतंत्रता और पश्चिममें व्यभिचार लीला या अर्द्ध भारत (Half India)	१	१०००	)
९७	स्तवन संग्रह भाग ५ वां	१	१०००	अमूल्य
९८	समवसरण प्रकरण हिन्दी अनु०	१	१०००	,,
९९	गोडवाड़ के मूर्तिपूजक और ढुंढ०	१	१०००	।)
१००	बालीके फेसले	१	१०००	)
१०१	प्राचीन छन्द गुणावली भाग ३ रा	१	१०००	)
१०२	प्राचीन छन्द गुणावली भाग ४ था	१	१०००	)
१०३	जैनजाति महोदय प्र० १ ला	१	१०००	४)
१०४	जैनजाति महोदय प्र० २ रा	१	१०००	
१०५	जैनजाति महोदय प्र० ३ रा	१	१०००	
१०६	जैनजाति महोदय प्र० ४ था	१	१०००	
१०७	जैनजाति महोदय प्र० ५ वां	१	१०००	
१०८	जैनजातिय महोदय प्र० ६ ठा	१	१०००	
			२२३५००	२२)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आपश्री के सदुपदेश से स्थापित संस्थाए।

संख्या.	संस्थाओं के नाम.	स्थान.	संवत्
१	जैन बोर्डिंग	ओशियोंतीर्थ	१९७२
२	जैन पाठशाला	फलोधी	१९७२
३	श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला	,,	१९७२
४	श्री जैन लायब्रेरी	,,	१९७३
५	श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला	ओशियोंतीर्थ	१९७३
६	श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानभण्डार	,,	१९७६
७	श्री कक्कान्ति लायब्रेरी	,,	१९७६
८	श्री जैन नवयुवक प्रेममण्डल	फलोधी	१९७७
९	श्री रत्नप्रभाकर प्रेम पुस्तकालय	,,	१९७९
१०	श्री जैन नवयुवक मित्रमण्डल	लोहावट	१९८०
११	श्री सुखसागर ज्ञानप्रचारक सभा	,,	१९८०
१२	श्री वीर मण्डल	नागोर	१९८१
१३	श्री मारवाड़ तीर्थ प्रबन्धकारिणी कमेटी	फलोधीतीर्थ	१९८१
१४	श्री ज्ञानप्रकाशक मण्डल	रूण	१९८१
१५	श्री ज्ञानवृद्धि जैन विद्यालय	कुचेरा	१९८१
१६	श्री महावीर मित्रमण्डल	,,	१९८१
१७	श्री ज्ञानोदय जैन पाठशाला	खजवाणा	१९८१
१८	श्री जैन मित्रमण्डल	,,	१९८१
१९	श्री रत्नोदय ज्ञानपुस्तकालय	पीसांगण	१९८२

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२०	श्री जैन पाठशाला	बीलाड़ा	१९८२
२१	श्री ज्ञानप्रकाशक मित्रमण्डल	,,	१९८२
२२	श्री जैन मित्रमण्डल	पीपाड़	१९८३
२३	श्री ज्ञानोदय जैन लायब्रेरी	,,	१९८३
२४	श्री जैन श्वेताम्बर सभा	,,	१९८३
२५	श्री जैन लायब्रेरी	वीसलपुर	१९८३
२६	श्री जैन श्वेताम्बर मित्रमण्डल	खारिया	१९८४
२७	श्री जैन श्वेताम्बर ज्ञान लायब्रेरी	सायरा (मेवाड़)	१९८४
२८	श्री जैन कन्याशाला	सादड़ी	१९८४
२९	श्री जैन कन्याशाला	लुणावा	१९८५

ज्ञानप्रकाशक मण्डल रूणसे प्रकाशित पुस्तकें ।

१ भाषण संग्रह भाग १ ला =)
२ भाषण संग्रह भाग २ रा -)
३ नौपदानुपूर्वि -)
४ नित्यस्मरण पाठमाला ।)
५ गुणानुकुलक (लोहावटसे) =)
६ द्रव्यानुयोग द्वि० प्रवेश (,,) =)

पुस्तकें मिलनेके पते— श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला,
पो० फलोधी (मारवाड़)

या

मैनेजर राजस्थान सुन्दर साहित्य सदन—जोधपुर.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com